Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

**अल्लाह तआला का आदेश**

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

**(सूरत बक़रह:184)**

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़्तियार करो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 17

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

26 रमज़ान 1443 हिज्री कमरी, 28 शहादत 1401 हिज्री शम्सी, 28 अप्रैल 2022 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

**रोगी और यात्री रोज़ा न रखे, इस में बात यह है अल्लाह तआला ने नहीं फ़रमाया कि जिसको इख़्तियार हो रख ले, जिसका इख़्तियार हो न रखे**

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

## रमज़ान की हक़ीक़त

رَمَض रमज़ सूरज की तपिश को कहते हैं। रमज़ान में चूँकि इन्सान खाने और पीने और समस्त जस्मानी लज़्ज़तों पर सब्र करता है। दूसरे अल्लाह तआला के आदेशों के लिए एक गर्मी और जोश पैदा करता है। रुहानी और जस्मानी गर्मी और तपिश मिल कर रमज़ान हुआ। शब्दकोश वाले जो कहते हैं कि गर्मी के महीने में आया, इस लिए रमज़ान कहलाया, मेरे नज़दीक यह सही नहीं है क्योंकि अरब के लिए यह ख़ुसूसीयत नहीं हो सकती। अध्यात्मिक रम्ज़ से मुराद रुहानी लगाव और शोक और धर्म के लिए जोश होता है। रमज़ इस हरारत को भी कहते हिं जिस से पत्थर इत्यादि गर्म हो जाते हैं। (मल् फूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 194 मुद्रित 2018 क़ादियान)

## यात्रा के मध्य रोज़ा

आप अलैहिस्सलाम से पुछा गया कि यात्रा के मध्य रोज़ा रखने का क्या हुक्म है? आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि : "क़ुरआन से तो यही मालूम होता है कि مَنۡ کَانَ مِنۡکُمۡ مَّرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّۃٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ (अल् बक़र: : 185) अर्थात रोगी और यात्री रोज़ा न रखे। इस में कारण यह है। यह अल्लाह तआला ने नहीं फ़रमाया कि जिसका इख़्तियार हो रख ले, जिसका इख़्तियार न हो न रखे। मेरे ख़्याल में यात्री को रोज़ा नहीं रखना चाहिए

शेष पृष्ठ 12 पर

**रोज़ा उस चीज़ का नाम नहीं कि कोई व्यक्ति अपना मुँह-बंद रखे और सारा दिन न कुछ खाए और न पीए, बल्कि उसे हर रुहानी नुक़्सानदेह और हानि देनी वाली चीज़ से भी बचाया जाए न झूठ बोला जाए न ग़ालियां दी जाएं न ग़ीबत की जाए, न झगड़ा किया जाये।**

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

لَعَلَّکُمۡ تَتَّقُوۡنَ में एक और फ़ायदा यह बताया कि रोज़ा रखने वाला बुराईयों और बदियों से बच जाता है और यह उद्देश्य इसी तरह पूरा होता है कि दुनिया से विच्छिन्न होने की वजह से इन्सान की रुहानी नज़र तेज़ हो जाती है और वह इन बुराइयों को देख लेता है जो उसे पहले नज़र नहीं आती थी। इसी तरह गुनाहों से इन्सान इस तरह भी बच जाता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है रोज़ा उस चीज़ का नाम नहीं कि कोई व्यक्ति अपना मुँह-बंद रखे और सारा दिन न कुछ खाए और न पीए बल्कि रोज़ा यह है कि मुख को खाने पीने से ही न रोका जाए बल्कि उसे हर रुहानी नुक़्सानदेह और हानिकारक वस्तुओं से भी बचाया जाए न झूठ बोला जाये न ग़ालियां दी जाएं न ग़ीबत की जाए। न झगड़ा किया जाए। अब देखो ज़बान पर क़ाबू रखने का हुक्म तो हमेशा के लिए है लेकिन रोज़ादार खासतौर पर अपनी ज़बान पर क़ाबू रखता है क्योंकि अगर वह ऐसा न करे तो उसका रोज़ा टूट जाता है और अगर कोई व्यक्ति एक महीना तक अपनी ज़बान पर क़ाबू रखता है तो यह अमर बाक़ी ग्यारह महीनों में भी इस के लिए हिफ़ाज़त का एक माध्यम बन जाता है और इस तरह रोज़ा उसे हमेशा के लिए गुनाहों से बचा लेता है।

शेष पृष्ठ 12 पर

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

### अज़ान से क़रीब समय में सहरी खाना

(1920) हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं अपने घर वालों में सहरी खाया करता था तो फिर मुझे जल्दी होती कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सुबह की नमाज़ पाऊं।

### सहरी और फ़ज्र की नमाज़ में कितना समय हो?

(1921) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हमने सहरी खाई। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए खड़े हुए। (क़तादा कहते थे) मैं ने पूछा कि अज़ान और सहरी के मध्य कितना समय होता? तो उन्होंने कहा : यथा पच्चास आयतों के।

### सहरी खाने का आदेश

(1922) हज़रत अब्दुल्लाह (बिन उमर) रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहरी खाने के बग़ैर रोज़े रखे तो लोगों ने भी बग़ैर सहरी खाए रोज़े रखे और यह उन पर कठिन गुज़रा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मना किया। उन्होंने कहा : आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो बग़ैर सहरी खाए रोज़े रखते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं तुम्हारी तरह नहीं। मुझे बराबर खिलाया भी जाता है और पिलाया भी जाता है। (सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् सौम, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

## 127 वां जलसा सालाना क़ादियान

## 23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है

## (क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत, क़ादियान (भाग-9)

प्रत्येक नबी और रसूल जो आया उसने लोगों को अल्लाह की इबादत का हुक्म दिया और उसकी इबादत में यह हिक्मत बताई कि वह समस्त संसार का मालिक है और इसी के हुक्म से इस कायनात में हर चीज़ अपना कर्तव्य अदा कर रही है।

तक़रीबन हर मज़हब के अक़ीदे के अनुसार इस कायनात को पैदा करने वाला एक ख़ालिक़ और मालिक है। इसके नाम तो अलग हो सकते हैं परन्तु मुराद ख़ुदा तआला की ज़ात ही होती है। मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब की मुक़द्दस कुतुब से कुछ इबारतें निम्नलिखित हैं ।

वेद और गीता में ख़ुदा की रूपरेखा

वह एक है किसी दूसरे के भागीदारी के बिना है।

(छन्द ज्ञान उपनिषद 1-2-6)

अनुवाद : इस संसार की चीज़ों में कुछ भी हरकत है वे सब उस हाकिम, क़ुदरत रखने वाले की इच्छा से है। (यजुर्वेद, अध्याय 40- मंत्र 1)

अनुवाद : (हे मालिक तेरे जैसा न कोई दोनों लोकों में है और न ज़मीन के कणों में और न तेरे जैसा कोई पैदा हुआ है और न होगा।

(यजुर्वेद, अध्याय 27 - मंत्र 36)

अनुवाद : यह समस्त संसार उस अल्लाह के आदेश से चल रहा है।

(यजुर्वेद ,अध्याय 40- मंत्र 1)

एकेश्वरवाद का वर्णन भगवत गीता से

अनुवाद : हे मनुष्यों अपने इश्वर को पहचानो क्योंकि वह एक इश्वर तुम्हारा पैदा करने वाला है इस इश्वर ने तुम्हें हवा (वायु) दी। अग्नी दी,धरती दी, आकाश दिया, जल दिया, तुम अपने इश्वर को पहचानो जिसने तुम्हें इतने इनामात दिए। हे इनसानो अगर तुम मुझे नहीं पहचानोगे तो बहुत बड़ी गुमराही में होगे।

(भगवत गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

अनुवाद : मेरी सिफ़ात को न जानने वाले बेवक़ूफ़ लोग मुझे शरीर वाला समझ कर मेरा अपमान करते हैं । (गीता, अध्याय 9 श्लोक 11)

अनुवाद : अपनी अदृश्य शक्ल में समस्त कायनात में प्रवेश किए हुए सभी जानदार मुझ में से हैं लेकिन मैं उनमें रहता नहीं। गीता, अध्याय 9 श्लोक 11)

तौरात और इंजील में ख़ुदा का तसव्वुर

यहूदियों और ईसाइयों की मुक़द्दस किताब के आरम्भ में ही ये तहरीर है।

(क) ख़ुदा ने आरंभ में ज़मीन और आकाश को पैदा किया। ख़ुदा ने कहा रोशनी हो जा और रोशनी हो गई। ख़ुदा ने रोशनी को दिन किया और अँधेरे को रात। (किताबुल मुक़द्दस पुराना और नया अह्दनामा, पैदाइश बाब 1 आयत 1 से 3)

(ख) सुन ले है इस्राईल ख़ुदावंद हमारा ख़ुदा, अकेला ख़ुदावंद है, तू अपने सारे दिल और अपने सारे जी और अपने सारे ज़ोर से ख़ुदावंद अपने ख़ुदा को दोस्त रख।

(इस्तस्ना, बाब 6 आयत 4)

(ग) ख़ुदा की भांति कोई नहीं जो तेरी मदद के लिए आसमान पर और अपने प्रताप में आकाश पर सवार है। (इस्तस्ना, बाब 33 आयत 26)

इंजील में वर्णन है कि " और हमेशा की ज़िंदगी यह है कि वह तुझे ख़ुदा ए वाहिद और बरहक़ और यसू मसीह को जिसे तू ने भेजा है जाने।

(इंजील, यूहन्ना, ब 17 आयत 4)

गुरु ग्रंथ साहब में ख़ुदा का तसव्वुर

गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु जी ने फ़रमाया

अनुवाद : उस ख़ुदा तआला के हुज़ूर ही झुको। जो अव्वल है, पाक है, और शाश्वत है और समस्त ज़मानों में एक ही हालत का हामिल है अर्थात जिसकी किसी भी सिफ़त में सदैव खत्म हो जाना पैदा नहीं हो सकता।

(जपूजी गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 7 पृष्ठ 1)

गुरू नानक जी के निकट ख़ुदा तआला का मुक़र्रब बनने के लिए किसी ख़ास मुल्क, इलाक़े, धर्म, क़ौम, क़बीला या नसल से पैदा होना ही ज़रूरी नहीं। हर एक नेक और ईमानदार व्यक्ति जो ख़ुलूस-ए-दिल से अपने ईमान के अनुसार आमाले सालिह बजा लाता है उसका कुर्ब हासिल कर सकता है। गुरू नानक जी फ़रमाते हैं :

अनुवाद : बुराई अच्छी तरह प्रकट हो जाती है छुपी नहीं रहती। वह अल् हक़ सब कुछ देखता है। कोई भी बात उस से छुपी नहीं है। हर व्यक्ति ने छलांग लगाई है लेकिन जो अल्लाह तआला चाहता है वही कुछ होता है। उसके दरबार में ज़ात और ताक़त की कोई क़दर-ओ-क़ीमत नहीं है और वहां इन्सान का नए जीवों से वास्ता पड़ता है। वे लोग बहुत ही क़लील हैं जो इज़्ज़त और आबरू हासिल करते हैं वही भले लोग हैं ।

(आसावार गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 469, पृष्ठ 5 और 6)

इसी कारण से अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरी इबादत में ही तुम्हारा लाभ है। मेरे अतिरिक्त जिस किसी की तुम इबादत करोगे वह तुम्हें फ़ायदा नहीं देगी। यहां इसी किस्म के माबूदों को जलाने का वर्णन है जो झूठे तौर पर ख़ुदा बन जाते हैं और अपनी इबादत करवाते हैं और उन्ही में से एक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में फ़िरऔन भी था।

एक लाख चौबीस हज़ार नबी रसूल, अवतार जो इस दुनिया में आए उन्होंने एक ही अल्लाह, एक ही ख़ुदा, एक ही इश्वर, की इबादत का आदेश दिया और इसके इलावा अल्लाह की ही मख़लूक़ में से किसी और की इबादत लाभदायक नहीं हो सकती। इस लिए वे इबादत भी ज़ाए होगी और जिसकी भी इबादत की जाएगी वह भी उनसे बुरा करेगा और उसको भी अल्लाह तआला जहन्नुम का ईंधन इबरत और नसीहत के लिए बनाएगा।

इस तशरीह के बाद इस आयत पर कोई आरोप बाक़ी नहीं रहता। जैसा कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद महदी मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो! इस झरने की ओर दौड़ो कि यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवनदायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, किस ढपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।"

(कुश्ती-ए- नूह,रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 22-21)

आरोप आयत नंबर 2 (l)

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا (سورۃ نمبر 48آیت نمبر 21،)

अनुवाद : अल्लाह ने तुमसे कसीर अम्वाल-ए-ग़नीमत का वादा किया है जो तुम हासिल करोगे। अत: ये तुम्हें उसने तुरंत प्रदान कर दिए और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए ताकि यह मोमिनों के लिए एक बड़ा निशान हो जाएगी और वह तुम्हें सदमार्ग की तरफ़ हिदायत दे।

आरोप आयत नंबर 2 (m)

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

(सूरत अनफ़ाल , सूरत नंबर 8 आयत नंबर 70)

अनुवाद : अत:जो माल-ए-ग़नीमत तुम हासिल करो इस में से हलाल और पवित्र खाओ और अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। निसंदेह अल्लाह बहुत बख़शने वाला (और बार-बार रहम करने वाला है।

स्पष्टीकरण : निवेदन कर्ता ने जिन 26 आयात को खत्म करने की मांग की है (मुख में मिट्टी) उनमें नंबर 2 (l) और 2(m) में अम्वाल-ए-ग़नीमत का वर्णन है। उसके स्पष्टीकरण में तहरीर है कि इन आयात का साबिक़ा आयात और तारीख़ी हालात के दृष्टिकोण में अध्यन करना होगा।

जैसा कि वर्णन हो चुका है कि मुस्लमान मुहाजिर कुफ़्फ़ार मक्का के हाथों सताए

शेष पृष्ठ 9 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

**"याद रखो मेरा सिलसिला यदि केवल दुकानदारी है तो इस का नामोनिशान मिट जाएगा, लेकिन अगर ख़ुदा तआला की ओर से है और निसंदेह उसी की तरफ़ से है तो सारी दुनिया इस का विरोध करे यह बढ़ेगा और फैलेगा और फ़रिश्ते इस की हिफ़ाज़त करेंगे, अगर एक व्यक्ति भी मेरे साथ न हो और कोई भी सहायता न दे, तब भी मैं यक़ीन रखता हूँ कि यह सिलसिला सफ़ल होगा"**

**(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)**

**अल्लाह तआला की तरफ़ से जब सहायता आती है तो कोई व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता**

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के बयान फ़र्मूदा कुछ ईमान वर्धक घटनाएं

**जहां ये वाक़ियात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई वर्णन करते हैं वहां हमें अपनी इस्लाह और अपने ईमान में मज़बूती की तरफ़ भी तवज्जा दिलाते हैं यदि उनको सुनकर हमें अपनी इस्लाह और बेहतरी की तरफ़ तवज्जा नहीं होती तो उन्हें सुनने का कोई लाभ नहीं**

**मोमिनों के लिए इबतिलाओं का आना भी निश्चित होता है सो अगर सब्र से काम लोगे और दुआएं करोगे तो अल्लाह तआला इन इबतिलाओं को दूर कर देगा**

**कुर्दी भाषा में पहली अहमदिया वेबसाइट के आरंभ का एलान**

**दुनिया के हालात के बारे में दुआओं की तहरीक अल्लाह तआला दुनिया को तबाही से बचाए और इन्सानों को अक़्ल दे और अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाल हों**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक (25 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

दो दिन पहले 23 मार्च का दिन था। यह दिन जमाअत में यौम-ए- मसीह मौऊद के दिन से पहचाना जाता है। इस दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहली बैअत ली थी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस दिन के हवाले से जमाअत में जलसे भी आयोजित किए जाते हैं जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा और ज़माने के लिहाज़ से आप के आने की ज़रूरत, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आप के बारे में भविष्यवाणियां, आपकी सीरत के विभिन्न पहलू इत्यादि वर्णन किए जाते हैं। ज़माने की ज़रूरत के लिहाज़ से अपने आने के महत्त्व का, एक अवसर पर आप ने इस प्रकार वर्णन फ़रमाया कि इस ज़माने में ख़ुदा तआला ने बड़ा फ़ज़ल किया है और अपने दीन (अर्थात इस्लाम) और हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सहायता में ग़ैरत दिखाकर एक इन्सान को जो तुम में बोल रहा है भेजा है ताकि वह इस रोशनी की तरफ़ लोगों को बुलाए। अगर ज़माने में ऐसा फ़ित्ला-और-फ़साद न होता और दीन के मिटाने के लिए जिस किस्म की कोशिशें हो रही हैं न होतीं तो कोई हर्ज नहीं था। फिर ज़रूरत कोई नहीं थी किसी के भेजने की। लेकिन अब तुम देखते हो कि हर तरफ़, दाएँ और बाएँ ओर से इस्लाम ही को नष्ट करने की फ़िक्र में समस्त कौमे लगी हुई हैं। हर तरफ़ दाएं बाएं जहां देखो यही है कि इस्लाम को किस तरह ख़त्म किया जाए।

इस वक़्त भी यह हाल था, यही कोशिश हो रही थी जब आप अलैहिस्सलाम ने दावा फ़रमाया और अब भी यही हाल है लेकिन मुस्लमान कहलाने वालों के अधिकतर लोगों को इस बात की समझ नहीं आती।

बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बराहीन-ए-अहमदिया में भी मैं ने ज़िक्र किया है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ छः करोड़ किताबें लिखी और प्रकाशित हो गई हैं। अजीब बात है कि हिंदुस्तान के मुस्लमानों की संख्यां भी छः करोड़। अर्थात उस वक़्त जब आप अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया उस वक़्त मुस्लमानों की तादाद छः करोड़ थी और इस्लाम के ख़िलाफ़ किताबों का शुमार भी इसी क़दर। अगर इस ज़्यादती को जो अब तक इन लेखों में हुई है छोड़ भी दिया जाए तो भी हमारे मुख़ालिफ़ एक एक किताब पाक-ओ-हिंद के हर एक मुस्लमान के हाथ में दे चुके हैं। अगर अल्लाह तआला का जोश ग़ैरत में न होता और إِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ उस का वादा सच्चा न होता तो निसंदेह समझ लो कि इस्लाम आज दुनिया से उठ जाता और उस का नाम-ओ-निशान तक मिट जाता। परन्तु नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला का छुपा हुआ हाथ उस की हिफ़ाज़त कर रहा है।

(उद्धरित मल् फूज़ात, भाग प्रथम पृष्ठ 73)

आप अलैहिस्सलाम ने अपने दावे के बाद यह बताया कि किस तरह अल्लाह तआला की सहायता और नुसरत आपके साथ है। किस तरह अल्लाह तआला की क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन की भविष्यवाणियां आपके हक़ में पूरी हो रही हैं। किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियां अपने महदी और मसीह के हक़ में पूरी हो रही हैं। कि मैंने कहा विभिन्न जलसे होते हैं इन जलसों में भी सुन रहे होंगे एम. टी. ए. पर भी प्रोग्राम आते हैं उस पर भी सुन रहे होंगे और इस की वज़ाहत हो रही होगी तो सुनने वालों को सुनना चाहिए।

इस वक़्त मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की वर्णन फ़र्मूदा कुछ बातें वर्णन करूँगा। ये वे वाक़ियात हैं या वे बातें हैं जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखे या बराह-ए-रास्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुने या कुछ रिवायत बयान करने वालों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को सुनाए जिन्हों ने ख़ुद ये देखे थे और उन वर्णन करने वालों में ग़ैर भी शामिल थे, अपने भी शामिल थे। जहां ये वाक़ियात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई वर्णन करते हैं वहां हमें अपनी इस्लाह और अपने ईमान में मज़बूती की तरफ़ भी तवज्जा दिलाते हैं। यदि उनको सुनकर हमें अपनी इस्लाह और बेहतरी की तरफ़ तवज्जा नहीं होती तो उन्हें सुनने का कोई फ़ायदा नहीं। इसलिए इस नज़र से उन बातों को हमें सुनना चाहिए और अब भी सुने ताकि हम अपने ईमान में मज़बूती पैदा करें और उन्हें अपने ईमान में मज़बूती का माध्यम बनाएँ।

अम्बिया के मुख़ालिफ़ीन का अम्बिया के सम्बन्ध में हमेशा यह शेवा रहा है कि वे जो भी कोई इलम-ओ-इर्फ़ान की बात करें तो यही कहते हैं कि कोई दूसरा उन्हें सिखाता है यहाँ तक कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी क़ुरआन-ए-करीम के बारे में ये एतराज़ है कि नऊज़ो बिल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई सिखाता था हालाँकि यह वह किताब है जिसकी कोई मिसाल पेश नहीं की जा सकती। यह तो अल्लाह तआला का चैलेंज है। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से मैं वर्णन करता हूँ कि जब बराहीन-ए-अहमदिया आप ने तहरीर फ़रमाई और आप ने शुरू में यह वर्णन फ़रमाया कि इतनी संख्या में मैं लिखूँगा। लेकिन इस के बाद अल्लाह तआला ने मामूरियत का जो मुक़ाम अता फ़रमाया तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ये बातें अब ख़ुदा तआला ने अपने हाथ में ले ली हैं, ये काम अल्लाह तआला ने अपने हाथ में ले लिया है और वह हालात के अनुसार जो विषय सिखाता रहेगा वे मैं वर्णन करता रहूँगा तो मुख़ालिफ़ीन ने यह एतराज़ कर दिया कि आप अलैहिस्सलाम को कोई लिख कर देता था और आप अलैहिस्सलाम वर्णन कर देते थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बारे में एक तक़रीर में वर्णन फ़रमाया है उस ज़माने में एक अख़बार होता "ज़मींदार" और "एहसान" एक दूसरा अख़बार था ये मुख़ालिफ़ अख़बारात ये भी लिखते रहते हैं कि कोई मौलवी चिराग़ अली साहिब हैदराबादी थे वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ये मज़ामीन लिख कर भेजा करते थे। जो आप अलैहिस्सलाम ब्राहीन-ए-अहमदिया में प्रकाशित कर देते थे। और जब तक उनकी तरफ़ से मज़ामीन का सिलसिला जारी रहा आप अलैहिस्सलाम भी किताब लिखते रहे। परन्तु जब उन्होंने मज़मून भेजने बंद कर दिए तो आप अलैहिस्सलाम की किताब भी ख़त्म हो गई। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं यह समझ में नहीं आता कि मौलवी चिराग़ अली

साहिब को क्या हो गया। लोग कहते हैं नाँ वह लिख के दिया करते थे। क्या हो गया उन्हें कि जो अच्छा नुक्ता सूझता है वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिख कर भेज देते और इधर उधर की मामूली बातें अपने पास रखते। आख़िर मौलवी चिराग़ अली साहिब लेखक हैं। बराहीन-ए-अहमदिया के मुक़ाबले में उनकी किताबें रखकर देख लिया जाए। उनकी कुछ किताबें हैं, उनको बराहीन-ए-अहमदिया के मुक़ाबले में रख लो कि क्या कोई भी उनमें निसबत है? कहाँ बराहीन अहमदिया और कहाँ उनकी लेखनियाँ। फिर वजह क्या है कि दूसरों को तो ऐसा मज़मून लिख कर दे सकते थे जिसकी कोई नज़ीर ही नहीं मिलती और जब अपने नाम पर कोई मज़मून प्रकाशित करना चाहते तो इस में वे बात ही पैदा नहीं होती। अत: अव्वल तो उन्हें ज़रूरत ही क्या थी कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लेख लिख लिख कर भेजते। और अगर भेजते तो उम्दा चीज़ अपने पास रखते और मामूली चीज़ दूसरे को दे देते। जैसे ज़ौक़ के विषय में, ज़ौक़ भी शायर एक गुज़रे हैं, उनके मुताल्लिक़ सब जानते हैं कि वह ज़फ़र को, बहादुर शाह ज़फ़र को नज़्में लिख लिख कर दिया करते थे।परन्तु "दीवान-ए- ज़ौक़'' और "दीवान-ए-ज़फ़र'' आजकल दोनों पाई जाती हैं। उन्हें देखकर साफ़ नज़र आता है कि ज़ौक़ के कलाम में जो फ़साहत और बलाग़त है वह ज़फ़र के कलाम में नहीं। जिस से साफ़ मालूम होता है कि अगर वह ज़फ़र को कोई चीज़ देते भी थे तो अपनी बची हुई देते थे, आला चीज़ नहीं देते थे। हालाँकि बादशाह ज़फ़र था। उद्देश्य हर मामूली अक़्ल वाला इन्सान भी समझ सकता है कि अगर मौलवी चिराग़ अली साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मज़ामीन भेजा करते थे तो उन्हें चाहिए था कि मार्फ़त के उम्दा उम्दा नुक्ते अपने पास रखते और मामूली इलम की बातें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिख कर देते। परन्तु मौलवी चिराग़ अली साहिब की किताबें भी मौजूद हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें भी। उन्हें एक दूसरे के मुक़ाबला में रखकर देख लो। कोई भी उनमें निसबत नहीं है। उन्होंने अर्थात मौलवी चिराग़ अली साहिब ने तो अपनी किताबों में केवल बाइबल के हवाले जमा किए हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम के वे मआरिफ़ पेश किए हैं जो तेराह सौ साल में किसी मुस्लमान को नहीं सूझे और उन मआरिफ़ और उलूम का सेंकड़वां बल्कि हज़ारवां हिस्सा भी उनकी किताबों में नहीं।

(उद्धरित फ़ज़ायल-ए-क़ुरआन (6) अनवारुल उलूम, भाग 14 पृष्ठ 350)

फिर और मौलवी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ शोर मचाते हैं, इन मौलवियों और मुख़ालिफ़ीन के शोर और मुख़ालिफ़त का वर्णन करते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जगह वर्णन किया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया उस वक़्त आप अलैहिस्सलाम की हालत और आप अलैहिस्सलाम के मानने वालों की हालत वास्तव में बहुत कमज़ोर थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "मेरा जन्म" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के "दावे से पहले की है और जबकि मैंने इबतिदा नहीं देखी परन्तु इबतिदा के निकट का ज़माना देखा है।" अर्थात होश-ओ-हवास में। "वह ज़माना भी कमज़ोरी का ज़माना था" जमाअत की। "तरह तरह मौलवी लोगों को जोश दिलाते थे और हर मुम्किन तरीक़ से दुख और तकालीफ़ पहुंचाते थे।" (ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 8 पृष्ठ 248)

लेकिन कोई रोक नहीं पैदा कर सके। जो अल्लाह तआला के काम थे वे पूरे होते रहे।

फिर यह जो मुख़ालिफ़त होती रही उसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क्या रद्दे अमल होता था हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कई दफ़ा सुना है कि लोग ग़ालियां देते हैं तब भी बुरा मालूम होता है कि ये लोग हमें ग़ालियां दे के क्यों अपना अंत ख़राब कर रहे हैं और अगर ग़ालियां न दें तब भी हमें तकलीफ़ होती है क्योंकि मुख़ालिफ़त के बग़ैर जमाअत की तरक़्क़ी नहीं होती। ग़ालियां देते हैं तो इस मुख़ालिफ़त की वजह से जमाअत का पैग़ाम पहुंचता है। तो फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि अत: हमें तो गालियों में भी मज़ा आता है। इसलिए एतराज़ात या लोगों की बदज़बानी की परवाह नहीं करनी चाहिए।

फिर पंजाबी में एक कहावत वर्णन की जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन करते थे कि "ऊंट अड़ आंदे ए लदे जानदे ने" अर्थात ऊंट जबकि चीख़ता रहता है परन्तु मालिक उस पर हाथ फेर के फिर भी अस्बाब लाद ही देता है। इसी तरह लोग चाहे कुछ कहें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह नसीहत फ़रमाई कि तुम नरमी और मुहब्बत से पेश आते रहो।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 15, पृष्ठ 265)

अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाएगा। इन्ही लोगों में से क़बूल करने वाले आ जाऐंगे। इस मुख़ालिफ़त के हवाले से एक जगह फ़रमाते हैं कि "जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा फ़रमाया तो आप अलैहिस्सलाम को मानने वाले केवल कुछ आदमी थे परन्तु उस के बाद आथम के साथ आप अलैहिस्सलाम का मुक़ाबला हुआ तो लोगों पर एक इबतिला आया और उन्होंने समझा कि आप अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी अपने ज़ाहिरी शब्दों के लिहाज़ से पूरी नहीं हुई। फिर लेखराम से आप मुक़ाबला हुआ तो जबकि आप अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी निहायत शान से पूरी हुई परन्तु हिंदूओं में आप पेशगोई के ख़िलाफ़ जोश पैदा हो गया और उन्होंने आप अलैहिस्सलाम से सख़्त मुख़ालिफ़त शुरू कर दी। इसी तरह मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी के फतवों का वक़्त आया तो जमाअत पर एक संकट आया। फिर डाक्टर अब्दुल हकीम के इर्तिदाद का वक़्त आया तो जमाअत पर संकट आया। उद्देश्य विभिन्न औक़ात में ऐसे ज़ोर से शोरिशें उठीं कि देखने वालों ने समझा कि अब ये लोग ख़त्म हो गए। लेकिन ख़ुदा तआला ने इन सब फ़ित्नों को मिटाने के सामान पैदा कर दीए और वे फ़ित्ने बजाय जमाअत को तबाह करने के इस की तरक़्क़ी और इज़्ज़त का माध्यम बन गए।

इसी तरह अब हो रहा है। "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "तुम देख लू'' कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में शोरिश उठी थी "कि किस-किस रंग में जमाअत के ख़िलाफ़ शोरिशें उठें, फ़साद हुए और किस तरह लोगों ने समझ लिया कि अब अहमदियत मिट जाएगी। परन्तु हर बार बजाय मिटने के जमाअत ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से पहले से भी ज़्यादा तरक़्क़ी कर गई।" (ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 33 पृष्ठ 298)

तो यह तो जमाअत की तारीख़ है और इलाही जमाअतों की यही तारीख़ होती है।

ये तरीक़ मुख़ालिफ़त का भी जारी रहता है। अब भी ऐसा ही है और इन्ही मुख़ालफ़तों में से गुज़रती हुई जमाअत तरक़्क़ी करती जाती है और अब भी इं शा अल्लाह तआला तरक़्क़ी करती रहेगी और कर रही है। मुख़ालिफ़ीन भी ज़ोर लगाते हैं, मुनाफ़ेक़ीन भी ज़ोर लगाते हैं लेकिन अल्लाह तआला अपने काम पूरे कर के रहता है जो उसने वादे किए हुए हैं वे पूरे कर के रहेगा। इं शा अल्लाह।

मुख़ालिफ़त के हवाले से एक तक़रीर में आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी फ़रमाया कि एक पहलू तो इस का यह है कि लोगों के अंदर मुख़ालिफ़त होती है और वे मुख़ालिफ़त की वजह से हमारी बातों के सुनने की तरफ़ ध्यान नहीं देते हैं। उनके दिलों में ग़ुस्सा पैदा होता है यह चीज़ तो हमारे लिए बुरी होती है। परन्तु एक सूरत यह भी हुआ करती है कि जब कोई व्यक्ति मुख़ालिफ़त की बातें सुनता है तो वह फिर कुरेदता है कि अच्छा ये ऐसे गंदे लोग हैं। ज़रा में भी तो जाके देखूं। और जब वह देखता है तो हैरान हो जाता है कि जो बातें मुझे उन्होंने बताई थीं वे तो बिल्कुल और थीं। अर्थात मुख़ालिफ़ीन ने जो बताई थीं वे तो और थीं और ये बातें जो अहमदी कहते हैं बिल्कुल और हैं और वह हिदायत को स्वीकार कर लेता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मुझे याद है मैं छोटा था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे, मज्लिस लगी हुई थी कि एक साहिब रामपुर से तशरीफ़ लाए। वह रहने वाले तो लखनऊ या उस के पास के किसी मुक़ाम से थे लेकिन रामपुर में रहते थे। छोटा क़द था उनका, दुबले पुतले आदमी थे। सहित्य के प्रेमी भी थे, शायर भी थे और उनको मुहावरात उर्दू के शब्दकोश लिखने पर नवाब साहिब रामपूर ने निर्धारित किया हुआ था। वे आके मजलिस में बैठे और उन्होंने अपना परिचय करवाया कि मैं रामपुर से आया हूँ और नवाब का दरबारी हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पूछा कि आप को यहां आने की तहरीक किस तरह हुई? उन्होंने कहा कि मैं बैअत में शामिल होने के लिए आया हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे। इस तरफ़ अर्थात रामपुर की तरफ़ तो हमारी जमाअत का आदमी बहुत कम पाया जाता है और इस तरफ़ तब्लीग़ भी बहुत कम है। आपको इस तरफ़ आने की तहरीक किस ने की? तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि ये लफ़्ज़ मेरे कानों में आज तक गूंज रहे हैं और मैं आज तक इस को भूल नहीं सका हालाँकि मेरी उम्र उस वक़्त सोला वर्ष की थी कि उसके जवाब में उन्होंने सहसा तौर पर कहा कि यहां

आने की तहरीक मुझे मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने की है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं तो अपनी कम उमर के लिहाज़ से इस बात को नहीं समझा हूँगा परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस पर हंस पड़े जो उन्होंने जवाब दिया और फ़रमाया कि वह किस तरह? तो उन्होंने कहा कि मौलवी सनाउल्लाह साहिब की किताबें नवाब साहिब के दरबार में आई थीं। और नवाब साहिब भी पढ़ते थे और मुझे भी पढ़ने के लिए कहा गया तो मैंने कहा जो जो हवाले ये लिखते हैं मैं मिर्ज़ा साहिब की किताबें भी निकाल कर देख लूं कि वे हवाले क्या हैं। ख़्याल तो मैं ने यह किया कि मैं इस तरह अहमदियत के ख़िलाफ़ अच्छा मवाद जमा कर लूँगा लेकिन जब मैं ने हवाले निकाल कर पढ़ने शुरू किए तो उनका मज़मून ही और था। इस से मुझे और दिलचस्पी पैदा हुई और मैंने कहा कि चंद और पृष्ठ भी अगले पिछले पढ़ लूं। जब मैंने वे पढ़े तो मुझे मालूम हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़मत जो मिर्ज़ा साहिब वर्णन करते हैं वे तो उन लोगों के दिलों में है ही नहीं। फिर कहने लगे मुझे फ़ारसी का शौक़ था। संयोग से मुझे दुर्रेसमीन फ़ारसी मिल गई और वह मैंने पढ़ी और वह जब पढ़नी शुरू की तो उस के बाद मेरा दिल बिल्कुल साफ़ हो गया और मैंने कहा कि जाकर बैअत कर लूं। तो मुख़ालिफ़त जहां फ़साद का माध्यम है वहां फ़ायदा भी होता है।

(उद्धरित चशमा-ए-हिदायत, अनवारुल उलूम भाग 22 पृष्ठ 433 से 435)

अत: इन दोनों हालात को सामने रखते हुए हमें भी अपनी तब्लीग़ की हिक्मत-ए-अमली तैयार करनी चाहिए।

नबी की अगर मुख़ालिफ़त न हो तो तब भी वे परेशान हो जाते हैं क्योंकि मुख़ालिफ़त ही तरक़्क़ी का माध्यम है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। इस मज़मून को वर्णन करते हुए एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मिस्री हुकूमत अपने ज़माने में निहायत नामी हुकूमत थी और उस का बादशाह अपनी ताक़त और क़ुव्वत पर घमंड रखता था अर्थात फ़िरऔन के ज़माने में। ऐसे बादशाह के मुक़ाबिल में हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की कोई हैसियत ही नहीं थी परन्तु बावजूद इसके जब वह बादशाह के पास गए तो जबकि बादशाह ने उनको डराया धमकाया और उन्हें और उनकी क़ौम को तबाह-ओ-बर्बाद कर देने का इरादा ज़ाहिर किया और कहा कि यदि तुम बाज़ न आए तो तुम्हें भी मिटा दिया जाएगा और तुम्हारी क़ौम को भी परन्तु हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम बाज़ नहीं आए और उन्होंने कहा जो पैग़ाम मुझे ख़ुदा ने देने के लिए दिया है वह मैं ज़रूर पहुंचाऊंगा। दुनिया की कोई ताक़त मुझे इस से रोक नहीं सकती। यही हाल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का था। यही हाल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का था और ऐसी ही हालत हमने, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की देखी है। सारी कौमें आप अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ थीं। हुकूमत भी एक रंग में आप अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ ही थी जबकि आख़िरी ज़माने में ये रंग नहीं रहा। बहरहाल कौमें आप अलैहिस्सलाम की मुख़ालिफ़ थीं। समस्त मज़ाहिब के अनुयाई आप अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ थे। मौलवी आप अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ थे। गद्दीनशीन आप अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ थे। अवाम आप अलैहिस्सलाम की मुख़ालिफ़ थी और उमरा और ख़वास भी आप अलैहिस्सलाम के दुश्मन थे। जबकि चारों तरफ़ मुख़ालिफ़त का एक तूफ़ान बरपा था। लोगों ने आप अलैहिस्सलाम को बहुत कुछ समझाया।

कुछ ने दोस्त बन कर कहा कि आप अलैहिस्सलाम दावों में किसी क़दर कमी कर दें। कुछ ने कहा कि अगर आप अलैहिस्सलाम अमुक अमुक बात छोड़ दें तो सब लोग आपकी जमाअत में शामिल हो जाऐंगे परन्तु आप उनमें से किसी बात की भी परवाह नहीं की और हमेशा अपने दावे को पेश फ़रमाते रहे और इस पर-शोर होता रहा।

मारें पड़ती रहीं क़तल होते रहे परन्तु बावजूद इन समस्त तकालीफ़ के और बावजूद इस के कि आप अलैहिस्सलाम का मुक़ाबला एक ऐसी दुनिया से था जिसका मुक़ाबला करने की ज़ाहिरी सामानों के लिहाज़ से आप अलैहिस्सलाम बिल्कुल ताक़त नहीं रखते थे फिर भी आप अलैहिस्सलाम ने मुक़ाबले को जारी रखा बल्कि मुझे ख़ूब याद है मैंने असंख्य बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुना कि नबी की मिसाल तो वैसी ही होती है जैसी लोग कहते हैं कि एक गांव में एक मजज़ूब सी औरत थी। जब वह बाहर निकलती तो छोटे छोटे लड़के इकट्ठे हो कर उसे छेड़ने लग जाते। उसके साथ मज़ाक़ करते। उसे तंग करते, मारा करते और उसे बार-बार तंग करते। वह भी मुक़ाबले में उन लड़कों को ग़ालियां देती और बद-दुआएँ देती। आख़िर एक दिन गांव वालों ने आपस में मश्वरा किया कि यह औरत मज़लूम है और हमारे लड़के उसे नाहक़ तंग करते रहते हैं। मज़लूमियत की हालत में ये उन्हें बद-दुआएँ देती है। कहीं ऐसा न हो कि इस की बद-दुआएँ कोई रंग रंग लाएंगे। हमें चाहिए कि अपने लड़कों को रोक लें ताकि न वे उसे तंग करें और न यह बद-दुआएँ दे। इस लिए इस मश्वरे के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि कल से सब गांव वाले अपने लड़कों को घरों में बंद रखेंगे और उन्हें बाहर नही निकलने दें। इस लिए दूसरे दिन सब लोगों ने अपने लड़कों से कह दिया कि आज से बाहर नहीं निकलना और मज़ीद एहतियात के तौर पर उन्होंने बाहर के दरवाज़ों की ज़ंजीरें लगा दीं। जब दिन चढ़ा और वह पागल औरत हसब-ए-मामूल अपने घर से निकली तो कुछ अरसा तक वह इधर उधर गलियों में फिरती रही। कभी एक गली में जाती, फिर कभी दूसरी गली में परन्तु उसे कोई लड़का नज़र नहीं आता। पहले तो यह हालत हुआ करता था कि कोई लड़का उस के दामन को घसीट रहा है। कोई उसे चुटकी काट रहा है। कोई उसे धक्का दे रहा है। कोई उस के हाथों के साथ चिमटा हुआ है और कोई उस से मज़ाक़ कर रहा है परन्तु आज उसे कोई लड़का दिखाई नहीं दिया। दोपहर तक तो उसने इंतिज़ार किया परन्तु जब देखा कि अब तक कोई लड़का अपने घर से नहीं निकला तो वह दूकानों पर गई और हर दूकान पर जा कर कहती है कि आज तुम्हारा घर गिर गया है? बच्चे मर गए हैं? आख़िर हुआ क्या है कि वे नज़र नहीं आते? थोड़ी देर के बाद जब इस तरह उसने हर दुकान पर जा कर यह कहना शुरू किया तो लोगों ने कहा कि ग़ालियां तो इस तरह भी मिलती हैं, बद-दुआएँ तो यह अब भी दे रही है और इस तरह भी मिलती हैं जब लड़के छेड़ते हैं। तो छोड़ो बच्चों को, उनको क़ैद क्यूँ-कर रखा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह कहावत वर्णन कर के फ़रमाया करते थे कि अनबया अलैहिस्सलाम का हाल भी अपने रंग में ऐसा ही हुआ करता है कि दुनिया उनको छेड़ती है तंग करती है उन पर ज़ुलम और सितम ढाती है और इस क़दर ज़ुलम करती है कि उन के लिए ज़िंदगी गुज़ारना मुश्किल हो जाता है और एक तबक़े के दिल में ये एहसास पैदा होना शुरू हो जाता है कि लोग ज़ुलम से काम ले रहे हैं उन्हें नहीं चाहिए कि ऐसा करें परन्तु फ़रमाया कि वे भी अर्थात अम्बिया भी दुनिया को नहीं छोड़ सकते। जब दुनिया उनको नहीं सताती तो वह ख़ुद उस को झिंझोड़ते हैं और बेदार करते हैं। पैग़ाम देते हैं। कोई बात बताते हैं। तब्लीग़ की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा करते हैं ताकि दुनिया उनकी तरफ़ मुतवज्जा हो और उनकी बातों को सुने।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद ,भाग 24 पृष्ठ 272 से 274)

फिर अम्बिया में सख़्ती के बारे में कहा जाता है कि अम्बिया सख़्ती क्यों करते हैं?

तो इस बारे में भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया कि अम्बिया की सख़्ती अपनी ज़ात के लिए नहीं होती बल्कि अल्लाह तआला के मुक़ाम को क़ायम करने के लिए अगर कभी सख़्ती दिखाते हैं और ग़ैरत दिखाते हैं तो वह होती है। अपनी ज़ात के लिए तो उनमें बिल्कुल विनम्रता होती है। इस बारे में "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ही एक घटना है कि एक दफ़ा लाहौर की एक गली में एक व्यक्ति ने आपको धक्का दिया। आप अलैहिस्सलाम गिर गए जिससे आप अलैहिस्सलाम के साथी जोश में आ गए और क़रीब था कि उसे मारते लेकिन आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उसने अपने जोश में सच्चाई की हिमायत में ऐसा किया है।" यह व्यक्ति जो है यह तो यही समझा है नाँ मौलवियों की बातें सुनके कि मिर्ज़ा साहिब झूठे हैं तो मैं अपना बदला लूं तो उसने तो सच्चाई की वजह से यह किया है "उसे कुछ ना कहो। अत: अम्बिया अपने नफ़्स के सवाल की वजह से नहीं बोलते बल्कि ख़ुदा की इज़्ज़त के क़ियाम के लिए बोलते हैं।

तो यह नहीं ख़्याल करना चाहिए कि अल्लाह तआला के नबी भी ऐसा ही करते हैं "अर्थात अगर वह कभी सख़्ती करें।'' उनमें और आम लोगों में बड़ा अंतर होता है वह ख़ुदा तआला के लिए करते हैं और आम लोग अपने लिए करते हैं। अत: अगर किसी व्यक्ति को यह एहसास पैदा हो जाए।" फिर आगे आप रज़ियल्लाहु अन्हु नसीहत फ़र्मा रहे हैं "कि मैं घटना में कमज़ोर हूँ तो ऐसा इन्सान गुमराह हो नहीं सकता।'' वह अपनी कमज़ोरी की तरफ़ नज़र रखेगा अल्लाह तआला से मदद माँगेगा। "इन्सान गुमराह उस वक़्त होता है जब वह यक़ीन रखता है कि मैं हक़ पर हूँ।" और फिर उस पर घमंड ज़ाहिर होता है।

अत: हमें अनबया के उस्वा को देखते हुए हमेशा आजिज़ी का इज़हार करते रहना चाहिए और यही गुनाह से बचने का भी माध्यम है।

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक हवाला है। "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मुआवीया की नमाज़ का घटना वर्णन फ़रमाया करते थे कि उनसे एक मर्तबा फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई लेकिन वह इस ग़लती के नतीजे में नीचे नहीं गिरे बल्कि तरक़्क़ी की।''शैतान ने उन पर क़ाबू नहीं पा लिया बल्कि अल्लाह का क़ुरब हासिल करने की कोशिश की।'' अत: जो गुनाह का एहसास करता है वह गुनाह से बचता है और जब गुनाह का एहसास नहीं रहता तो इन्सान गुनाह में मुबतला हो जाता है। अत: मोमिन को اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ। पर ग़ौर करना चाहिए और समझना चाहिए कि वे ख़तरात से महफ़ूज़ नहीं हुआ। केवल उसी वक़्त महफ़ूज़ हो सकता है जबकि ख़ुदा की आवाज़ उसे कह दे। अत: इन्सान को अपने नफ़्स की कमज़ोरी का मुहासिबा करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के लिए रूहानियत के रास्ते खुल जाते हैं "जो अपना मुहासिबा करता रहता है "जो ऐसा नहीं करता उस के लिए रूहानियत के रास्ते बंद हो जाते हैं और ऐसा इन्सान गुमराह हो जाता है।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 18 पृष्ठ 141-142)

एक जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "बग़ैर मेहनत दीनी या दुनयावी मेहनत के कोई इन्सान इज़्ज़त हासिल नहीं कर सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि हमारे ज़माना में समस्त इज़्ज़त ख़ुदा ने हमारे साथ वाबस्ता कर दी है। अब इज़्ज़त पाने वाले या हमारे मुरीद होंगे या हमारे मुख़ालिफ़ होंगे।"

इज़्ज़त पाने वाले लोगों को देख लो या तो वही लोग इज़्ज़त पाएँगे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाले हैं या वे जो मुख़ालिफ़त करने वाले हैं। दीनी लिहाज़ से जो अपने आपको मुख़ालिफ़ समझते हैं। "इस लिए फ़रमाते थे" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि "मौलवी सनाउल्लाह साहिब को देख लू वह कोई बड़े मौलवी नहीं इन जैसे हज़ारों मौलवी पंजाब और हिन्दुस्तान में पाए जाते हैं। उनको अगर सम्मान हासिल है तो केवल हमारी मुख़ालिफ़त की वजह से। वे लोग ख़ाह इस अमर का इक़रार करें या न परन्तु घटना यही है कि आज हमारी मुख़ालिफ़त में इज़्ज़त है या हमारे समर्थन में। मानो असल मर्कज़ी वजूद हमारा ही है और मुख़ालिफ़ीन को भी अगर इज़्ज़त हासिल होती है तो हमारी वजह से" होती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 8 पृष्ठ 614)

अत: यही हम आज भी देखते हैं। अगर मौलवियों की रोटी चल रही है या उन्हें कुर्सी मिली हुई है तो अहमदियत की मुख़ालिफ़त की वजह से है और अब तो सियास्तदान भी कुछ मुल्कों में खासतौर पर पाकिस्तान में अहमदियत की मुख़ालिफ़त की वजह से अपनी सियासत चमकाने की कोशिश करते हैं ताकि उनकी कुर्सी क़ायम रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ जो साज़िशें हुईं उनका वर्णन करते हुए वर्णन करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ भी लोगों ने साज़िशें कीं। क़तल के मुक़द्दमात दायर किए परन्तु अल्लाह तआला ने हमेशा मुख़ालिफ़ीन को अपने मक़ासिद में ना-मुराद रखा। ऐसे ही इक़दाम-ए-क़तल के मुक़द्दमा में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ अदालत में गवाही देने आया और इस उम्मीद पर आया कि मिर्ज़ा साहिब को हथकड़ी अगर न लगी होगी तो अदालत में नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) ज़लील हालत में खड़े होंगे परन्तु बावजूद इस के कि वह अंग्रेज़ डिप्टी कमिशनर जिसके सामने मुक़द्दमा पेश था वह हमारे सिलसिला का मुख़ालिफ़ भी था और उसने ज़िला में निर्धारित होते ही कहा था कि यह व्यक्ति अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो हमारे यसू मसीह का अपमान करता है, उनको कहता है कि वह फ़ौत हो गए अब तक बचा हुआ है इस को सज़ा क्यों नहीं दी जाती? मैं अब उसे सज़ा दूँगा। परन्तु जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस के सामने पेश हुए तो अल्लाह तआला ने ऐसा तसर्रुफ़ किया कि आप अलैहिस्सलाम की शक्ल देखते ही उस का द्वेष दूर हो गया और इस ने अपने पास हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बैठने के लिए कुर्सी बिछा दी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस पर बैठ गए। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी जो आया ही इसलिए था कि आप अलैहिस्सलाम को ज़िल्लत की हालत में देखे। उसने जब देखा कि आप पर बैठे हुए हैं तो बर्दाश्त न करते हुए उसने कप्तान डगलस डिप्टी कमिशनर से सवाल किया कि मुझे भी कुर्सी दी जाए। उसने, मौलवी मुहम्मद हुसैन ने यह ख़्याल किया कि जब मुजरिम के लिए कुर्सी बिछाई जाती है तो गवाह को क्यों कुर्सी नहीं मिलेगी परन्तु कप्तान डगलस ने जब यह बात सुनी तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया और उसने ग़ज़बनाक हो कर कहा कि तुझे कुर्सी नहीं मिलेगी। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने कहा मेरे बाप को लार्ड साहिब के दरबार में कुर्सी मिला करती थी मुझे भी कुर्सी दी जाये। मैं अहल-ए-हदीस का ऐडवोकेट हूँ और मेरा हक़ है कि मुझे कुर्सी मिले। तब कप्तान डगलस ने कहा कि बक बक मत कर और पीछे हट और सीधा खड़ा हो जा। अब बजाय इसके कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अपमान देखता ख़ुदा तआला ने उसे ज़लील कर दिया। फिर ये तो अदालत के कमरे के अंदर का घटना है। जब मौलवी-साहब बाहर निकले तो लोगों को ये दिखाने के लिए कि गोया अंदर भी उन्हें कुर्सी मिली है बरामदे में एक कुर्सी पड़ी थी इस पर बैठ गए लेकिन चूँकि नौकर वही करते हैं जो वह अपने आक़ा को करते देखते हैं। चपड़ासी ने जब देखा कि मौलवी-साहब को अंदर तो कुर्सी नहीं मिली और अब बरामदे में कुर्सी पर आ बैठे हैं तो उसे ख़्याल आया कि अगर साहिब बहादुर ने देख लिया तो मुझ पर नाराज़ होगा। वह दौड़ा दौड़ा आया और कहने लगा आपको यहां पर बैठने का हक़ नहीं। उठ जाईए। इस तरह बाहर के लोगों ने भी देख लिया कि मौलवी-साहब की अदालत में कितनी इज़्ज़त हुई है। मौलवी-साहब इस पर ग़ुस्सा में जल भुन कर आगे बढ़े तो किसी व्यक्ति ने ज़मीन पर चादर बिछाई हुई थी इस पर बैठ गए परन्तु संयोग की बात है कि चादर वाला भी झट आ पहुंचा और कहने लगा कि मेरी चादर छोड़ दो। ये तुम्हारे बैठने से पलीद होती है क्योंकि तुम एक मुस्लमान के ख़िलाफ़ ईसाइयों की तरफ़ से अदालत में गवाही देने आए हो। तो याद रखू कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जब नुसरत आती है तो कोई व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता।

पुलिस के अफ़्सर और सिपाही क्या बड़े से बड़े आदमी की ज़िंदगी का कोई एतबार नहीं और एक सैकिण्ड में अल्लाह तआला दुश्मनों को हलाक कर सकता है। अत: अल्लाह तआला के हुज़ूर झुको और इस से दुआएं करो। हाँ मोमिनों के लिए इबतिलाओं का आना भी मुक़द्दर होता है सो अगर सब्र से काम लोगे और दुआएं करोगे तो अल्लाह तआला इन इबतिलाओं को दूर कर देगा।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 15 पृष्ठ 184 से 186)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ईसाइयों के दरमयान एक मुबाहिसा हुआ था उस की रुवेदाद जो वर्णन हुई है वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब में जंग मुक़द्दस के नाम से शामिल है। इस मुबाहिसा का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक जगह अपने ख़ुतबा में हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से बात कर रहे हैं कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे आथम के मुबाहिसे में हमने जो नज़ारा देखा इस से पहले तो हमारी अक़्लें दंग हो गईं अर्थात उसको देखकर पहले तो हमारी अक़्लें दंग हो गईं और फिर हमारे ईमान आसमानों तक पहुंच गए। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि जब ईसाई मुबाहिसे से तंग आ गए और उन्होंने देखा कि हमारा कोई दाओ नहीं चला तो चंद मुस्लमानों को अपने साथ मिला कर उन्होंने हंसी करने के लिए यह शरारत की कि कुछ अंधे कुछ बहरे और कुछ लूले और कुछ लंगड़े बुला लिए और उन्हें मुबाहिसे से पहले एक तरफ़ बिठा दिया। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो झट उन्होंने अँधों बहरों और लूलो लंगड़ों को आपके सामने पेश कर दिया और कहा कि बातों से झगड़े तै नहीं होते। आप कहते हैं कि मैं मसीह नासरी का मसील हूँ और मसीह नासरी अँधों को आँखें दिया करते थे। बहरों को कान बख़्शा करते थे और लूलों लंगड़ों के हाथ पांव दरुस्त किया करते थे। मसीह नासरी तो ये किया करते थे हमने आपको तकलीफ़ से बचाने के लिए इस वक़्त चंद अंधे, बहरे और लूले ,लंगड़े इकट्ठे कर दिए हैं। अगर आप वाक़ई मसील मसीह हैं तो उनको अच्छा कर के दिखा दीजीए। ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि हम वहां बैठे थे। हम लोगों के दिल उनकी इस बात को सुनकर बैठ गए और जबकि हम समझते थे कि यह बात यूंही है अर्थात हक़ीक़त इस में कोई नहीं है जो मसीह नासरी की तरफ़ मंसूब की जाती है लेकिन फिर भी हमारे दिल बैठ गए। इस बात से घबरा गए कि आज उन लोगों को हंसी मज़ाक़ और ठट्ठे का अवसर मिल जाएगा परन्तु जब हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चेहरे को देखा तो आप चेहरे पर नापसंदीदगी या घबराहट के कोई आसार

ही नहीं थे। जब वे बात ख़त्म कर चुके तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि देखिए साहिब! मैं जिस मसीह के मसील होने का दावा करता हूँ इस्लामी तालीम के मुताबिक़ वह इस किस्म के अँधों बहरों और लूलो लंगड़ों को अच्छा नहीं किया करता था परन्तु आपका अक़ीदा यह है कि मसीह जस्मानी अँधों, जस्मानी बहरों, जस्मानी लूलो और लंगड़ों को अच्छा किया करता था तो आपकी किताब में यह भी लिखा है कि अगर तुम में एक ज़रा भर भी ईमान हो और तुम पहाड़ों से कहो कि यहां से वहां चला जाये तो वह चला जाएगा और अगर तुम बीमारों पर हाथ रखोगे तो वे अच्छे हो जाऐंगे। अत: यह सवाल मुझसे नहीं हो सकता। मैं तो वे मोजज़े दिखा सकता हूँ जो मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखाए। आप इन मोजज़ों का मुतालिबा करें तो मैं दिखाने के लिए तैयार हूँ। बाक़ी रहे इस किस्म के मोजज़े सौ आपकी किताब ने बता दिया है कि हर वह ईसाई जिसके अंदर एक राई के बराबर भी ईमान हो वैसे ही मोजज़े दिखा सकता है जैसे हज़रत मसीह नासरी ने दिखाए। अत: आपने बड़ी अच्छी बात की है जो हमें तकलीफ़ से बचा लिया और उन अँधों बहरों और लूलो और लंगड़ों को इकट्ठा कर दिया है। अब ये अंधे बहरे और लूले लंगड़े मौजूद हैं अगर आप में एक राई के बराबर भी ईमान मौजूद है तो उनको अच्छा कर के दिखा दीजिए। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि हमने देखा कि इस जवाब से पादरियों को ऐसी हैरत हुई कि बड़े बड़े पादरी इन लूलों और लंगड़ों को खींच खींच कर अलग करने लगे। तो अल्लाह तआला अपने मुक़र्रबीन को हर अवसर पर इज़्ज़त बख़्शता है और उनको ऐसे ऐसे जवाब समझाता है जिसके नतीजा में दुश्मन बिल्कुल हक्का बक्का रह जाता है।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 88-89)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुख़ालिफ़त का एक घटना सयालकोट का है जो आपने वर्णन किया। कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सयालकोट में गए तो मौलवियों ने फ़तवा दिया कि जो उनके लैक्चर में जाएगा उसका निकाह टूट जाएगा लेकिन चूँकि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की कशिश ऐसी थी कि लोगों ने इस फ़तवे की भी कोई परवाह नहीं की तो मौलवियों ने रास्तों पर पहरे लगा दिए ताकि लोगों को जाने से रोकें और सड़कों पर पत्थर जमा कर लिए कि जो नहीं रुकेगा उसे मारेंगे फिर जलसा गाह से लोगों को पकड़ पकड़ कर ले जाते कि लैक्चर न सुन सकें। कहते हैं एक बी-टी साहिब होते थे जो उस वक़्त सयालकोट में सिटी इन्सपैक्टर थे और फिर सुपरीटेंडेंट पुलिस हो गए थे। अब मालूम नहीं उनका क्या ओहदा है जब यह वर्णन कर रहे थे। इन बी-टी साहिब का इंतिज़ाम था। जब लोगों ने शोर मचाया और फ़साद करना चाहा तो चूँकि हज़रत साहिब की तक़रीर उसने भी सुनी थी वह हैरान हो गया कि इस तक़रीर में तो हमला आर्यों और ईसाइयों पर किया गया है और जो कुछ मिर्ज़ा साहिब ने कहा है अगर वे मौलवियों के ख़्यालात के ख़िलाफ़ भी हो तो भी इस से इस्लाम पर कोई एतराज़ नहीं आता। ये तो ईसाइयों के ख़िलाफ़ बातें हो रही हैं और अगर बातें सच्ची हैं जो मिर्ज़ा साहिब वर्णन कर रहे हैं तो इस्लाम का सच्चा होना साबित होता है। अगर ये बातें सच्ची हैं तो इस से तो इस्लाम सच्चा साबित होता है। फिर मुस्लमानों के फ़साद करने की वजह क्या है? जबकि वह सरकारी अफ़्सर था वह जलसे में खड़ा हो गया और कहने लगा ये तो कहते हैं कि ईसाइयों का ख़ुदा मर गया। इस पर उसने वहां मुस्लमानों को सम्बोधित करके कहा कि तुम क्यों ग़ुस्सा होते हो? ये तो यही कह रहे हैं नाँ कि ईसाइयों का ख़ुदा मर गया इस में तुम्हारे गुस्से की क्या बात है। ये तुम्हारे लिए अच्छी बात है।

उद्देश्य उन लोगों का हम से ये सुलूक है अर्थात जो मुख़ालिफ़त करने वाले हैं और साधारणतया यही नज़र आता है कि उनमें से अर्थात कि मुस्लमानों में से अगर कोई आर्यों में चला जाए तो मुस्लमानों को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता लेकिन मिर्ज़ा साहिब की बात कोई न सुने। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं असल बात यह है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में यह ख़्याल ग़लत है। अगर मुस्लमानों में से कोई अपना मज़हब बदलता है तो हमें फ़र्क़ पड़ता है।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि

اے دل تُو نِیز خاطِر اِیناں نِگاہ دار کآخِر کنند دعویٔ حُبِّ پیمبرم

(उद्धरित तारीख़ शुद्धी मल्काना, अनवारुल ऊलूम भाग 7 पृष्ठ 192)

हे दिल! तू उन लोगों का लिहाज़ रख क्योंकि आख़िर ये मेरे पैग़ंबर की मुहब्बत का दावा करते हैं। इसलिए हमें तो बहरहाल उनके दीन बदलने का या मज़हब बदलने का या बिगड़ने का दर्द होगा।

एक दफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक व्यक्ति ने कहा कि मैं आपका बहुत मुरीद हूँ लेकिन एक बहुत बड़ी ग़लती आपसे हुई है। आप अलैहिस्सलाम जानते हैं कि उल्मा किसी की बात नहीं माना करते क्योंकि वे जानते हैं अगर मान ली तो हमारे लिए अपमान होगा। लोग कहेंगे ये बात अमुक को सूझी उन्हें नहीं सूझी। इसलिए उनसे मनवाने का यह तरीक़ है कि उनके मुँह से ही बात निकलवाई जाए। जब आप वफ़ात-ए-मसीह का मसला मालूम हुआ था तो आप अलैहिस्सलाम को चाहिए था कि चीदा चीदा उल्मा की दावत करते और एक मीटिंग कर के ये बात उनके सामने पेश करते कि ईसाइयों को हयात मसीह के अक़ीदे से बहुत मदद मिलती है और वे एतराज़ कर के इस्लाम को नुक़्सान पहुंचा रहे हैं। वे कहते हैं कि तुम्हारा नबी फ़ौत हो गया और हमारे मज़हब का संस्थापक आसमान पर है। इसलिए वह अफ़ज़ल है बल्कि स्वयं ख़ुदा है। इस का जवाब दिया जाए? ये सवाल करते। उस वक़्त जो उल्मा आप अलैहिस्सलाम ने दावत पर बुलाए होते तो वे उल्मा जो थे यही कहते कि आप अलैहिस्सलाम ही फ़रमाएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते। आप फ़रमाएं इस का क्या जवाब है? तो आप अलैहिस्सलाम कि राय तो दरअसल आप की ही सायब हो सकती है लेकिन मेरा ख़्याल है कि अमुक आयत से हज़रत मसीह की वफ़ात साबित हो सकती है। उल्मा फ़ौरन कह देते कि ये बात ठीक है। बिसमिल्लाह कह के ऐलान कीजिए हम समर्थन के लिए तैयार हैं। ये तरीक़ा उस व्यक्ति ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मौलवियों को मनाने का बताया। फिर कहता है कि फिर इसी तरह यह मसला पेश हो जाता कि हदीसों में मसीह की दुबारा आमद का वर्णन है परन्तु जब मसीह अलैहिस्सलाम फ़ौत हो गए तो इस का क्या अर्थ समझा जाएगा। इस पर कोई आलम आपके विषय कह देता कि आप ही मसीह हैं और समस्त उल्मा ने इस पर मोहर तसदीक़ सब्त कर देनी थी। ये तजवीज़ सुनकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

अगर मेरा दावा इन्सानी चाल से होता तो मैं बेशक ऐसा ही करता परन्तु यह ख़ुदा के हुक्म से था। ख़ुदा ने जिस तरह समझाया उसी तरह मैंने किया।

तो चालें और फ़रेब इन्सानी चालों के मुक़ाबले में होते हैं ख़ुदा तआला की जमाअतें उनसे कदापि नहीं डर सकतीं। ये हमारा काम नहीं। ख़ुद ख़ुदा तआला का काम है। वही इस पैग़ाम को पहुंचाएगा।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए- महमूद भाग 12 पृष्ठ 196 - 197)

चांद और सूरज ग्रहण की घटना हमारी जमाअत की प्रसिद्ध घटना है। इस बारे में भी एक मुख़ालिफ़ मौलवी जो ग़ालिबन गुजरात का रहने वाला था हमेशा लोगों से कहता रहता था कि मिर्ज़ा साहिब के दावा से बिल्कुल धोखा नहीं खाना। हदीसों में साफ़ लिखा है कि महदी की अलामत ये है कि उस के ज़माने में सूरज और चांद को रमज़ान के महीने में ग्रहण लगेगा। जब तक ये भविष्यवाणी पूरी न हो और सूरज और चांद को रमज़ान के महीने में ग्रहण न लगे, उनके दावे को कदापि सच्चा नहीं समझना। संयोग की बात कि वह ज़िंदा ही था कि सूरज और चांद के ग्रहण की भविष्यवाणी पूरी हो गई। उस के पड़ोस में एक अहमदी रहता था उसने सुनाया कि जब सूरज को ग्रहण लगा तो उस मौलवी ने इस घबराहट में अपने मकान की छत पर चढ़ कर टहलना शुरू कर दिया। वह टहलता जाता था और कहता जाता था कि'' हुन लोग गुमराह होंगे। हुन लोग गुमराह होंगे'', बार-बार यही कहता था अर्थात अब लोग गुमराह हो जाऐंगे। तो उसने यह नहीं समझा कि जब भविष्यवाणी पूरी हो गई है तो लोग हज़रत मिर्ज़ा साहिब को मान कर हिदायत पाएँगे। गुमराह नहीं होंगे। ईसाई भी एक तरह से ये मानते थे कि वे समस्त अलामतें पूरी हो गई हैं जो पहली कुतुब

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

में पाई जाती हैं परन्तु दूसरी तरफ़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा सुनकर यह भी कहते थे कि इस वक़्त इत्तिफ़ाक़ी तौर पर एक झूठे ने दावा कर दिया। जैसे मुस्लमान कहते हैं अलामतें पूरी हो रही हैं परन्तु संयोग की बात यह है कि इस वक़्त एक झूठे ने दावा कर दिया। ये मुस्लमानों की हालत है अब। परन्तु अजीब बात यह है कि ऐसा संयोग एक झूठे को ही नसीब होता है सच्चे को नसीब नहीं होता।

(उद्धरित तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 10 पृष्ठ 56)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भूतकाल के बारे में आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हर एक बुराई धीर धीरे पैदा होती है। यह कभी नहीं होता कि एक व्यक्ति रात के वक़्त सच्चा सोए और सुबह को बदतरीन झूठ का मुर्तक़िब हो कर पहले तो इन्सानों पर भी झूठ नहीं बोलता था और अब ख़ुदा पर झूठ बोलने लगा'' सुबह उठ के। "इसके मुताबिक़ हम हज़रत मिर्ज़ा साहब के दावा से पहले की ज़िंदगी देखते हैं। तो आप यहां के हिंदूओं, सिखों और मुस्लमानों को बार-बार घोषणा करते हुए फ़रमाया कि क्या तुम मेरी पहली ज़िंदगी पर कोई एतराज़ कर सकते हो? परन्तु किसी को साहस नहीं हुआ बल्कि आपकी पवित्रता का इक़रार करना पड़ा। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी जो बाद में सख़्त तरीन मुख़ालिफ़ हो गया उसने अपने रिसाला में आप की ज़िंदगी की पाकीज़गी और बुराईयों से पवित्र होने की गवाही दी और मिस्टर ज़फ़र अली ख़ान के पिता ने अपने अख़बार में आप इबतिदाई ज़िंदगी के विषय में गवाही दी कि बहुत पाक-बाज़ थे। अत: जो व्यक्ति चालीस साल तक बुराईयों से पवित्र रहा और उस की ज़िंदगी पाक-बाज़ रही वह किस तरह रातों रात कुछ का कुछ हो गया और बिगड़ गया। मनोविज्ञानिकों ने माना है "अर्थात् (psychiatrists) जो हैं (psychologist) जो हैं वे भी कहते हैं'' कि हर ऐब और अख़लाक़ी नुक़्स आहिस्ता-आहिस्ता पैदा हुआ करता है। एक दम कोई परिवर्तन अख़लाक़ी नहीं होता है। अत: देखो कि आपका माज़ी कैसा बेऐब और बैंक्स और रोशन है!"

(मयार-ए-सदाक़त, अनवारुल ऊलूम, भाग 6 पृष्ठ 60-61)

फिर अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किस तरह नुसरत फ़रमाता रहा। इस बारे में हम देखते हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि जो ख़ुदा का रसूल हो उसके साथ ख़ुदा की नुसरत होती है। अगर नुसरत नहीं तो वे ख़ुदा का मुर्सल और रसूल नहीं।

लोग क़रीब होते हैं कि इस को हलाक कर दें परन्तु ख़ुदा की नुसरत आती है और इस को सफ़ल करती है और उस के दुश्मनों के मन्सूबों को ख़ाक में मिला देती है। यही मामला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में हुआ। आपको तरह तरह से मारने की कोशिश की गई, लोग मारने पर मुतय्यन हुए जिनका इलम हो गया और वे अपने इरादे में नाकाम हुए। मुक़द्दमे आप पर झूठे इक़दाम-ए-क़तल के बनाए गए। इस लिए मार्टिन क्लार्क ने झूठा मुक़द्दमा क़तल का बनाया और एक व्यक्ति ने कह भी दिया कि मुझे हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने निर्धारित किया था। मजिस्ट्रेट वह जो इस दावा के साथ आया था कि इस मुद्दई महदीयत और मसीहीयत को अब तक किसी ने पकड़ा क्यों नहीं? मैं पकड़ूंगा परन्तु जब मुक़द्दमा होता है तो वही मजिस्ट्रेट कहता है कि मेरे नज़दीक यह झूठा मुक़द्दमा है। बार-बार उसने यही कहा और आख़िर उस व्यक्ति को ईसाइयों से अलैहदा कर के पुलिस अफ़्सर के अधीन रखा गया और वह व्यक्ति रो पड़ा और उस ने बता दिया कि मुझे ईसाइयों ने सिखाया था और ख़ुदा ने इस झूठे इल्ज़ाम का अंत कर दिया।

इसी तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हमारी जमाअत के एक पुरजोश मुबल्लिग़ हैं मौलवी उमरदीन साहिब शिमलवी। यह अपनि घटना वर्णन करते हैं कि वह भी इसी मयार पर परख कर अहमदी हुए थे। वह सुनाते हैं कि शिमले में मौलवी मुहम्मद हुसैन और मौलवी अब्दुर्रहमान सय्याह और चंद और आदमी मश्वरा कर रहे थे कि अब मिर्ज़ा साहिब के मुक़ाबले में क्या तरीक़ इख़तियार करना चाहिए। मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब ने कहा कि मिर्ज़ा साहिब ऐलान कर चुके हैं कि मैं अब मुबाहिसा नहीं करूँगा। हम इश्तिहार मुबाहिसा देते हैं अगर वह मुक़ाबले पर खड़े हो जाऐंगे तो हम कहेंगे कि उन्होंने झूठ बोला कि पहले तो इश्तिहार दिया कि हम मुबाहिसा किसी से नहीं करेंगे और अब मुबाहिसा के लिए तैयार हो गए हैं और अगर मुबाहिसे पर आमादा नहीं हुए तो हम शोर मचा देंगे कि देखो मिर्ज़ा साहिब हार गए। इस पर मौलवी उम्र दीन साहिब ने कहा कि इस की क्या ज़रूरत है? मैं जाता हूँ और जा के उनको क़तल कर देता हूँ। मसला ही ख़त्म हो। मौलवी मुहम्मद हुसैन ने कहा कि लड़के तुझे क्या मालूम ये सब कुछ किया जा चुका है। मौलवी उम्र दीन साहिब के दिल में यह बात बैठ गई कि जिसकी ख़ुदा इतनी हिफ़ाज़त कर रहा है वह ख़ुदा ही की तरफ़ से होगा।

यह लड़के तो थे। उन्होंने कहा कि इतनी हिफ़ाज़त अल्लाह तआला कर रहा है कि इतनी तदबीरों के बावजूद बचे रहे तो फिर यह ख़ुदा ही की तरफ़ से है। फिर उन्होंने जब बैअत कर ली तो वापस जाते हुए उनको मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी स्टेशन पर मिले। कहा तू किधर? तो उन्होंने कहा कि क़ादियान से बैअत कर के आया हूँ। मौलवी मुहम्मद हुसैन ने कहा कि तो बड़ा बुरा है। तेरे बाप को लिखूँगा। तो उन्होंने जवाब दिया कि मौलवी-साहब यह तो आप ही के ज़रीया से हुआ है जो कुछ हुआ है। अत: मुख़ालिफ़ उस को, अल्लाह तआला के प्यारे को मारना चाहते हैं और वह बचाया जाता है। ख़ुदा उसकी अपने ताज़ा इलम से सहायता करता है और हर मैदान में उस को इज़्ज़त देता है।

(उद्धरित मयार-ए-सदाक़त, अनवारुल ऊलूम भाग 6 पृष्ठ 61-62)

इसी तरह मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब का यह भी दावा था कि मैं मिर्ज़ा साहिब को तबाह कर दूँगा।

"मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जवानी के दोस्त थे और आप के ताल्लुक़ रखने वाले थे और जो हमेशा आप के लेखों की तारीफ़ किया करते थे। उन्होंने इस दावे के तुरंत बाद यह ऐलान किया "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब दावा किया तो उन्होंने ऐलान कर दिया "कि मैंने ही इस व्यक्ति को बढ़ाया था और अब मैं ही इस को तबाह कर दूँगा फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने रिश्तेदारों ने ऐलान कर दिया बल्कि कुछ अख़बारात में यह ऐलान छपवा भी दिया कि इस व्यक्ति ने दुकानदारी चलाई है इस की तरफ़ किसी को तवज्जा नहीं करनी चाहिए और इस तरह सारी दुनिया को उन्होंने बदगुमान करने की कोशिश की।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि "फिर यह मेरे होश की बात है कि बहुत से काम करने वाले लोगों ने जो ज़मींदारी व्यवस्था में कमीन कहलाते हैं आप के घर के कामों से इन्कार कर दिया'' अर्थात काम करने वाले जो कहलाते हैं उन्होंने घरों में बावजूद ज़मीन्दारी माहौल होने के, इलाक़े के ज़मींदार होने के आपके घर में आके काम करने से इन्कार कर दिया।'' इस के मुहर्रिक दरअसल हमारे रिश्तेदार ही थे। उद्देश्य अपनों और बेगानों ने मिलकर आप अलैहिस्सलाम को मिटाना और आप अलैहिस्सलाम को तबाह और बर्बाद कर देना चाहा। परन्तु ख़ुदा ने अपने बंदे से कहा "दुनिया में एक नबी आया पर दुनिया ने उसे क़बूल नहीं किया लेकिन ख़ुदा इसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोर-आवर हमलों से उसकी सच्चाई को ज़ाहिर कर देगा।

एक बेकस और बेबस इन्सान क़ादियान जैसी बस्ती में जहां हफ़्ता में केवल एक दफ़ा डाक आया करती थी, जहां एक प्राइमरी स्कूल भी नहीं था और जहां एक रुपया का आटा भी लोगों को उपलब्ध नहीं आता था, खड़ा होता है और फिर वह व्यक्ति भी ऐसा है जो न मौलवी है और न बहुत बड़ी जायदाद का मालिक है। (निसंदेह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक शरीफ़ ख़ानदान में से थे परन्तु राजों और नवाबों की तरह बहुत बड़ी जायदाद

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

के मालिक थे।) वह उठकर दुनिया के सामने यह ऐलान करता है "एक व्यक्ति" और पहले दिन ही कहता है कि ख़ुदा मेरे नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाएगा और कौन है जो आज कह सके कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम दुनिया के किनारों तक नहीं पहुंचा।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 1 पृष्ठ 324-325)

आज तो हम देखते हैं कोई दुनिया का कोना ऐसा नहीं जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम न पहुंचा हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "कज़्ज़ाब की हलाकत के वास्ते उसका किज़्ब ही काफ़ी है लेकिन जो काम अल्लाह तआला के जलाल और उस के रसूल की बरकात के इज़हार और सबूत के लिए हों और ख़ुद अल्लाह तआला के अपने ही हाथ का लगाया हुआ पौधा हो। फिर उस की हिफ़ाज़त तो स्वयं फ़रिश्ते करते हैं। कौन है जो इस को तलफ़ कर सके? याद रखो मेरा सिलसिला अगर निरी दुकानदारी है "जैसा कि उन्होंने कहा कि दुकानदारी है'' तो इस का नामोनिशान मिट जाएगा लेकिन अगर ख़ुदा तआला की तरफ़ से है और निसंदेह उसी की तरफ़ से है तो सारी दुनिया उस की मुख़ालिफ़त करे यह बढ़ेगा और फैलेगा और फ़रिश्ते इसकी हिफ़ाज़त करेंगे।" इं शा अल्लाह।'' अगर एक व्यक्ति भी मेरे साथ न हो और कोई भी मदद न दे। तब भी मैं यक़ीन रखता हूँ कि यह सिलसिला कामयाब होगा।" इं शा अल्लाह।

(मल् फूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 148)

अत: अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम आपकी बैअत का हक़ अदा करने वाले भी बनें और आपके पैग़ाम को दुनिया में पहुंचा कर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और इनामों के वारिस भी बनें। बे-वफ़ाओं में न हों बल्कि वफ़ादारों में हमारा शुमार हो अल्लाह तआला इस की हमें तौफ़ीक़ दे।

आज में एक वेबसाइट का भी ऐलान करूँगा। लॉन्च करूँगा। ये भी तब्लीग़ का, दुनिया के किनारों तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचाने का माध्यम है। ये कुर्दश भाषा में जमाअती वेबसाइट है islamahmadiyya.krd इस वेबसाइट की निगरानी डाक्टर इस्माईल मुहम्मद साहिब कर रहे हैं जिनके साथ कुर्दिश जमाअत के मैंबरान की एक टीम भी है। इस वेबसाइट का उद्देश्य कुर्दिश भाषा जानने वाले पाठकों को यह अवसर प्रदान करना है कि वह पहली बार अहमदिया जमाअत के अक़ायद को अपनी भाषा में ख़ुद पढ़ सकें। यह वेबसाइट बुनियादी तौर पर कुर्दिश भाषा के सुरानी डाईलेक्ट (dialect) पर मुश्तमिल है जिसके साथ बादीनी डाईलेक्ट में भी कुछ मवाद मौजूद है। वेबसाइट पर ख़बरें, लेख, तफ़सीर, किताबें और ख़ुतबात जुमआ और वीडीयो सैक्शन शामिल हैं। कुर्दिश अनुवाद कमेटी के सहयोग से इस वेबसाइट पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की असंख्य किताबों के साथ अन्य जमाअती कुतुब भी मुहय्या की गई हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें हैं। हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की किताबें हैं और दूसरा जमाअती लिटरेचर है जिस में "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी' 'मसीह हिन्दुस्तान में'' ज़रूरतुल ईमाम'' हकीकतुल महदी दाअवतुल अमीर, मन्सबे ख़िलाफ़त इत्यादि शामिल हैं। तो जुमा के बाद इं शा अल्लाह तआला यह वेबसाइट भी लॉन्च होगा। अल्लाह तआला बाबरकत करे।

इसी तरह दुनिया के जो हालात हैं इस बारे में भी कहना चाहूँगा कि दुआओं को जारी रखें। अल्लाह तआला दुनिया को तबाही से बचाए और इन्सानों को अक़ल दे और अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाले हों।

★ ★ ★


## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

**"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"**

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

### तालिबे दुआ

**KHALEEL AHMAD**

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)


पृष्ठ 2 का शेष

जाने के बाद मजबूरन समस्त माल और असबाब, दरोदीवार, मक्का में छोड़कर मदीना में आ गए इस हिज्रत की वजह से बज़ाहिर उनकी व्यापार और कारोबार जो मक्का में थे तबाह-ओ-बर्बाद हो गए थे मदीना आकर अंसार भाईयों की मदद से उन्होंने पुन: अपनी तिजारतें शुरू कीं ताकि जल्द से जल्द अपने पांव पर खड़े हो जाएं परन्तु कुफ़्फ़ार-ए-मक्का उनका पीछा नहीं छोड़ रहे थे। थोड़ी थोड़ी मुद्दत के बाद उन पर हमला करते और मजबूरन मुस्लमानों को अपने बचाओ और दिफ़ा के लिए उनसे जंग करनी पड़ती इन जंगों में जब फ़रीक़ मुख़ालिफ़ को शिकस्त हो जाती तो वह अपना माल और असबाब छोड़कर भाग जाते तो उनका छोड़ा हुआ माल मुस्लमानों में तक़सीम कर दिया जाता और उसे माल-ए-ग़नीमत कहा जाता था। इस तक़सीम का उद्देश्य यह होता था कि व्यर्थ की जंग जो उन पर थोपी गई और इस के लिए उन्हें तैयारी करनी पड़ी अपने माल और अपनी जान उनमें झोंकनी पड़ी इस के लिए अपनी तिजारत-ओ-कारोबार को अस्थाई तौर पर बंद करना पड़ा। इस नुक़सान की किसी हद तक तलाफ़ी हो सके।

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अलैहि वसल्लम के समय में उसकी तक़सीम का ये उसूल था कि सारे अम्वाल में से पांचवां हिस्सा अल्लाह और उसके रसूल के लिए वक़्फ़ कर दिया जाता था। इसके बाद शेष माल जंग में शरीक होने वालों में बराबर तक़सीम कर दिया जाता ये भी निश्चित था कि सवार को पैदल की निसबत दो हिस्से दिए जाते और पांचवां हिस्सा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए विशेष कर दिया जाता इस में से कुछ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने परिजनों में बाँट देते और अक्सर हिस्सा मुस्लमानों की इजतिमाई दीनी, क़ौमी उद्देश्यों में खर्च होता था। आयत में जो यह फ़रमाया गया عَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ (अत: ये तुम्हें उसने तुरंत प्रदान कर दिए) इन शब्दों में इन अम्वाल-ए-ग़नीमत के मिलने का वर्णन है जो ख़ैबर में लड़ने वाली जंग 7 मई 628) मैं मुस्लमानों को मिले थे और लोगों के हाथ उनसे रोक लिए (... فَ اَيْدِيَ النَّاسِ) से मुराद हुदैबिया के अवसर पर कुफ़्फ़ार मक्का को तुम पर हमला करने से बाज़ रखा।

माल-ए-ग़नीमत पर क़बज़ा करने और उसे इस्तिमाल करने के बारे में यहूद और ईसाइयों की दीनी किताब तौरात में भी वर्णित है कि और जब तू किसी शहर के पास उस से लड़ने के लिए आ पहुंचे तो पहले इस से सुलह का पैग़ाम कर। तब यूं होगा कि अगर वे तुझे उत्तर दे कि सुलह मंज़ूर और दरवाज़ा तेरे लिए खोल दे तो समस्त लोग जो इस शहर में पाए जावें तेरी भूमिकर देने वाली होगी और तेरी ख़िदमत करेगी और अगर वे तुझसे सुलह न करे बल्कि तुझसे जंग करे तो उसका घेराव कर और जब ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा उसे तेरे क़बज़े में कर देवे तो वहां के हर एक मर्द को तलवार की धार से क़तल कर परन्तु औरतों और लड़कों और पशुओं को और जो कुछ इस शहर में हो उसका सारा लूट अपने लिए। (इसतस्ना बाब 2010 से 15)

यहूदी शरीयत का यह हुक्म केवल एक काग़ज़ी हुक्म नहीं था जिस पर कभी अमल नहीं किया गया हो बल्कि बनी इस्राईल का हमेशा इसी पर अमल रहा है और यहूदी निर्णय हमेशा इसी असल के अधीन समझौते पाते रहे हैं। इसलिए मिसाल के तौर पर ध्यान दें

और उन्होंने (अर्थात बनू इस्राईल ने) मद्यानियों से लड़ाई की जैसा ख़ुदावंद ने मूसा को फ़रमाया था और सारे मर्दों को क़तल किया और उन्होंने इन मक़्तूलों के सिवा आदमी और रक़म और सूर और हूर और रुबा को जो मद्यान के पाँच बादशाह थे जान से मारा और बाऊर के बेटे बलअम को भी तलवार से क़तल किया और बनी इस्राईल ने मद्यान की औरतों और उनके बच्चों को कैद किया और उनके पशुओं और भेड़ बकरी और माल और अस्बाब सब लूट लिया।

(गिनती बाब 31आयत 12-7)

हज़रत मसीह नासरी को (जो वह भी बनी इस्राईल में से ही थे) जबकि अपनी ज़िंदगी में हुकूमत नसीब नहीं हुई और न जंग-ओ-जिदाल के अवसर पेश आए जिनमें उनका तरीक़ अमल ज़ाहिर हो सकता। परन्तु उनके कुछ फ़िक्रों से अंदाज़ा किया जा सकता है कि शरीर और बद बातिन दुश्मनों के विषय में उनके क्या ख़्यालात थे। इसलिए अपने दुश्मनों को सम्बोधित करके हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हे साँपों! साँपों के बच्चों तुम जहन्नुम की सज़ा से क्योंकर बचोगे?"

(मति बाब 23 आयत 33)

तौरात की वर्णित तालीम के बाद क़ुरआन-ए-मजीद में माल-ए-ग़नीमत को अपनी तहवील में लेकर उसे इस्तिमाल करने में कोई आरोप बाक़ी नहीं रहता।

(शेष आगे)

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेन-स्त्रेहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई (भाग-3)

## डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

**24 सितम्बर 2014 बुधवार का दिन**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस देखीं और हिदायात से नवाज़ा

पार्लियामेंट हाऊस में स्पीकर और विभिन्न सदस्य पार्लियामेंट की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

आज प्रोग्राम के अनुसार पार्लियामेंट हाऊस के लिए प्रस्थान था जहां नैशनल असैंबली आयरलैंड के स्पीकर और अन्य विभिन्न सदस्य पार्लियामेंट और सैनेटर्ज़ की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का प्रोग्राम था।

दस बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर पधारे और पार्लियामेंट हाऊस के लिए प्रस्थान हुआन। हुकूमत की ओर से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को मुकम्मल प्रोटोकोल दिया गया। पुलिस के चार मोटर साईकल हुज़ूर अनवर के क़ाफ़ला को Escort करने के लिए पहले से होटल पहुंचे हुए थे। प्रस्थान से पूर्व एक पुलिस ऑफीसर ने गाड़ियां ड्राईव करने वाले लोगों को विशेषता हिदायात दीं कि किस तरह क़ाफ़ले ने जाना है और यह विशेषता हिदायत दी कि रास्ता में कहीं भी किसी जगह भी चाहे रैड लाइट्स हों या राऊंड अबाओट Round About आए आपने किसी जगह रुकना नहीं है बल्कि निरन्तर चलते चले जाना है। पुलिस स्वयं समस्त चौराहों और अन्य जगहों पर रास्ता क्लीयर रखेगी। इस लिए Escort करते हुए प्रत्येक जगह रास्ता क्लीयर रखा और ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की "पार्लियामेंट हाऊस" तशरीफ़ आवरी हुई।

ऑफीसर केपटं Jhon Flaherty ने पार्लियामेंट हाऊस से बाहर आकर हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और स्वागतम कहा और हुज़ूर अनवर को अपने साथ पार्लियामेंट हाऊस के अंदर गए।

नैशनल असैंबली के स्पीकर Hon Sean Barrett पहले से ही हुज़ूर अनवर की आमद के मुंतज़िर थे। उन्होंने हुज़ूर अनवर को बड़ी गर्मजोशी से स्वागतम कहा और बताया कि यहां आयरलैंड में जमाअत अहमदिया से मेरा परिचय है और मैं कम्यूनिटी के कामों को क़दर की निगाह से देखता हूँ। आपकी कम्यूनिटी जबकि छोटी है और संख्या कम है परन्तु बड़े काम करने वाले और उत्सुक है और मैं यहां जमाअत के जलसा सालाना में भी शामिल हो चुका हूँ और जमाअत के माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं से बहुत प्रभावित हूँ।

उन्होंने बताया कि वह इस से पूर्व वज़ीर दिफ़ा भी रहे हैं। स्पीकर ने बताया कि उन्होंने अफ्रीक़ा के देश रवांडा की यात्रा की है इस हवाला से उन्होंने अफ्रीक़ा की कुछ समस्याओं और मुश्किलात का वर्णन किया।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं स्वयं अफ्रीक़ा में रहा हूँ। आठ वर्ष घाना में रहा हूँ। हुज़ूर अनवर ने जमाअत के प्रगति के कामों का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि अफ्रीक़ा में जमाअत ने बड़ी संख्या में स्कूल और हस्पताल क़ायम किए हैं और ग़रीब लोगों को शिक्षा और फ्री ईलाज की सहूलतें प्रदान की हैं। इसी तरह अफ्रीक़ा में ग़रीब लोगों को पीने का साफ़ पानी प्रदान करने और बिजली प्रदान करने पर भी काम हो रहा है।

हुज़ूर अनवर ने जमाअत के विभिन्न मानवता कामों का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि अफ्रीक़ा के विभिन्न देशों में हम मॉडल विलेज Model Village बनाने का काम कर रहे हैं और पीने का साफ़ पानी tap के माध्यम से प्रदान किया जा रहा है। सोलर सिस्टम के माध्यम से बिजली प्रदान की जा रही है। मस्जिद और कम्यूनिटी सैंटर भी बनाने का काम किया गया है। ग्रीन हाऊस बनवाया गया है ताकि गावं वाले अपनी आवश्यकता के अनुसार खेती कर सकें। इसी तरह Pave Street भी बनाई गई हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारे समस्त मानवता की भलाई के प्रोग्राम बिना मज़हब और मिल्लत और बिना रंग और नसल के हैं और प्रत्येक व्यक्ति चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी धर्म से हो वह उनसे लाभ उठा सकता है।

स्पीकर ने कहा कि हमारे कुछ आइरिश मिशनरी भी अफ्रीक़ा में जाते हैं और वहां हमने भी कुछ स्कूल खोले हुए हैं और उन स्कूलों से शिक्षा प्राप्त किए लोग विभिन्न जगहों पर काम कर रहे हैं।

सदर साहब जमाअत आयरलैंड भी इस मुलाक़ात में साथ थे। सदर साहब ने कहा जमाअत अहमदिया के स्कूल अल्लाह के फ़ज़ल से मुल्क में पर्याप्त शौहरत रखते हैं। इन स्कूलों से पढ़े हुए लोग हुकूमत के विभिन्न विभागों में आला ओहदों पर फ़ायज़ हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारे स्कूलों में दीनी शिक्षा भी दी जाती है और इस में आज़ादी है। ज़बरदस्ती नहीं है कि एक ही धर्म की शिक्षा दी जाए। प्रत्येक धर्म के विद्यार्थी अपनी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस बात पर स्पीकर साहब बहुत हैरान हुए।

स्पीकर साहब ने कहा कि मैं इन्सानियत की सेवा पर विश्वास रखता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम की शिक्षा भी यही है कि इन्सान ख़ुदा को पहचाने, ख़ुदा से सम्बन्ध पैदा हो और फिर प्रत्येक इन्सान दूसरे इन्सान का हक़ अदा करे और एक दूसरे की ज़रूरीयात का खयाल रखे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम तो बड़ा शांतिप्रिय धर्म है। परन्तु चरमपंथी मुस्लमान और दहश्तगर्द इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। हालाँकि इस्लाम का इस दहश्तगर्दी से कोई सम्बन्ध नहीं है और ये इन्साफ़ नहीं है कि किसी व्यक्ति या किसी ग्रुप की ग़लती से उसके धर्म को बदनाम किया जाए।

इस पर स्पीकर ने कहा कि कुछ जगह तो ईसाइयों की ओर से भी अत्याचार हो रहे हैं।

हुज़ूर ने फ़रमाया ईसाइयों की ओर से जो अत्याचार हो रहे हैं, परन्तु उनके धर्म का नाम कोई नहीं लेता कि यह अत्याचार ईसाइयों ने किया है। यदि कोई मुस्लमान करता है तो इस्लाम को बदनाम किया जाता है।

मुलाक़ात के इस अन्य विभिन्न मामलों और समस्याओं पर भी बातचीत हुई और विचार विमर्श हुआ।

मुलाक़ात का समय 15 मिनट तै था परन्तु यह मुलाक़ात 45 मिनट तक जारी रही। स्पीकर के सेक्रेटरी उसको समय के बारे में बताते रहे कि अब पार्लियामेंट का सैशन शुरू होने वाला है और इस में देरी हो रही है परन्तु स्पीकर ने इन संदेश की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वह निरन्तर 45 मिनट तक बैठे रहे

ग्यारह बजकर 45 मिनट पर यह मुलाक़ात ख़त्म हुई

**24 सितम्बर 2014 बुधवार का दिन**

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कान्फ्रैंस हाल (रुम नंबर2) में तशरीफ़ ले आए जहां बीस से अधिक सदस्य पार्लियामेंट और सैनेटर्ज़ हुज़ूर अनवर की आमद के मुंतज़िर थे। इन सदस्यों में देश की चारों बड़ी पार्टीयों Labour, Finegale, Finefail और Sinnfein के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सबसे पहले मेंबर पार्लियामेंट Hon, Eamon o'Cuiv जो पार्लियामेंट में अप्पोज़ीशन पार्टी के सीनीयर मेंबर भी हैं ने हुज़ूर अनवर को पार्लियामेंट में आने पर स्वागतम कहा और हुज़ूर अनवर और जमाअत का परिचय दूसरे सदस्य पार्लियामेंट से करवाया। उन्होंने जमाअत के कामों और सेवाओं की प्रशंसा की और जमाअत की ओर से सहयोग का वर्णन किया। उन्होंने जमाअत पर होने वाले अत्याचारों का भी वर्णन किया। इसके बाद समस्त सदस्यों ने बारी बारी अपना परिचय करवाया। कुछ सदस्य पार्लियामेंट के नाम दर्ज हैं।

Hon. Dan Naville (चेयरमैन Fine Gale पार्टी)

Hon. Johna Tuffi
Hon. Joe Costella
Hon. Sean Crow
Hon. Eri Byrn
Hon. Earon Crin
Hon. Hilde Garde Naughtow वह सेनिटर हैं
Hon. Fidelha Healy Eames वह सेनिटर हैं

एक मेंबर पार्लियामेंट ने हुज़ूर अनवर की सेवा में कहा कि जमाअत अहमदिया जिस तरह मानवता की क़द्रें क़ायम करने के लिए कहती है वे दूसरे मुस्लमानों में नज़र नहीं आती। यह मालूमात मैंने गहराई में जाकर प्राप्त की हैं। डबलिन बड़ा शहर है और देश की राजधानी भी है आपकी पहली मस्जिद यहां होनी थी।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम इं शा अल्लाह जल्दी डबलिन में भी मस्जिद बनाएंगे। यहां भी मस्जिद का उद्घाटन करेंगे

जमाअत के बारे में एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अहमदिया कम्यूनिटी इस्लाम का ही एक हिस्सा है और जमाअत अहमदिया ही हक़ीक़ी इस्लाम है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आख़िरी ज़माना में एक सुधारक मुस्लेह के आने की भविष्यवाणी फ़रमाई थी जो दीन को उस की हक़ीक़ी बुनियादों पर क़ायम करेगा। और सबको इस्लाम की सच्ची और हक़ीक़ी शिक्षाकी ओर बुलाएगा और एक हाथ पर जमा करेगा।

इस लिए इस भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम अवतरित हुए। आपने मसीह और महदी होने का दावा किया और जमाअत अहमदिया की बुनियाद रखी अब जो दूसरे मुस्लमान आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इन्कार करते हैं उनकी ओर से हमारे विरुद्ध जुल्म हो रहा है। और विशेषता पाकिस्तान में मज़ालिम का यह सिलसिला लंबे अरसा से जारी है और अहमदियों को शहीद किया जा है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अभी दो दिन पूर्व ही एक अहमदी डाक्टर को सिंध में शहीद कर दिया गया है। इन मज़ालिम और हुकूमत की ओर से विभिन्न पाबंदियों के क़ानून के कारण से हमारा केंद्र पाकिस्तान से लंदन स्थानांतरित हुआ। मुझसे पहले ख़लीफतुल मसीह को पाकिस्तान से हिज्रत करके लंदन आना पड़ा। इस कारण से अब मेरा क़ियाम भी लंदन में है। जमाअत अहमदिया का हैड ख़लीफतुल मसीह कहलाता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम इस्लाम की तब्लीग़ और संसार को इस्लाम की सुन्दर शिक्षा और इस्लाम का अमन और सलामती का संदेश पहुंचाने के साथ साथ बहुत सारे मानवता की भलाई के काम भी करते हैं। इन्सानी हमदर्दी के आधार पर हमारे बहुत सारे मंसूबे और प्रोग्राम जारी हैं। विशेषता तीसरी दुनिया में अफ़्रीक़ा के ग़रीब देशों में हमारे स्कूल और हस्पताल क़ायम हैं और साफ़ पानी प्रदान करने, बिजली प्रदान करने और अपने क़दमों पर खड़ा करने और ज़रूरतमंदों की धन की सहायता के हवाला से और भी बहुत से प्राजैक्ट जारी हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बहरहाल इसके कि लोग हमसे क्या व्यवहार करते हैं और हमारे विरुद्ध क्या मुश्किलात खड़ी करते हैं। हम बिना भेदभाव और मज़हब-ओ-मिल्लत सबकी एक समान सेवा करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तान के अतिरिक्त बंगला देश, इंडोनेशिया और मलेशीया और कुछ दूसरे देशों में भी हम पर मज़ालिम होते हैं और हमारा उत्पीड़न जारी है। परन्तु हम इन देशों में भी प्रत्येक जगह ज़रूरतमंदों, मुहताजों की सेवा करते हैं।

जिहाद के हवाला से बात होने पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम जिहाद का वह अर्थ नहीं लेते जिस तरह दूसरे मुस्लमान लेते हैं। हम इस बात के क़ायल हैं कि एक बड़ा जिहाद यह है कि अपने अंदर पाक बदलाव पैदा की जाए और बुराईयों के विरुद्ध जिहाद हो। फिर तब्लीग़ का जिहाद है। अमन और सहिष्णुता का संदेश पहुंचाने का जिहाद है।

एक मेंबर पार्लियामेंट महिला ने प्रश्न किया कि क्या आपका दूसरे ग़ैर अहमदी लीडरों से सम्पर्क होता है और आप किसी जगह इकट्ठे हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम तो चाहते हैं कि ऐसा हो, जो कॉमन चीज़ है, जो सब में मुश्तर्क है। एक ख़ुदा है, एक नबी है, इस पर ही इकट्ठे हों परन्तु इन लीडरों की ओर से कोई सकारात्मक उत्तर नहीं मिलता। ये हमसे बात करना नहीं चाहते।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि आप प्लेटफार्म प्रदान कर दें और मुस्लिम लीडर्ज़ जमा करें तो हम बात करने के लिए तैयार हैं हम तो दुनिया में अमन के क़ियाम के लिए कार्य कर रहे हैं और जो भी अमन, अदल और इन्साफ़ का क़ियाम चाहेगा हम उसके साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार हैं।

इसी मेंबर पार्लियामेंट महिला ने दूसरा प्रश्न किया कि इस्लाम में महिलाओं के हुक़ूक़ क्या हैं और क्या वह मस्जिद में नमाज़ मर्दों के साथ पढ़ सकती हैं।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम ने तो महिलाओं के हुक़ूक़ चौदह सौ वर्ष पूर्व से दिए हुए हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम में मर्दों और महिलाओं के हुक़ूक़ में कोई भेदभाव नहीं है किसी की हक़तलफ़ी नहीं है। हुक़ूक़ में एक तवाज़ुन है। कान्फ्रैंस रुम में एक ओर दो अहमदी आइरिश महिलाएं खड़ी थीं। हुज़ूर अनवर ने इन दोनों का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि दोनों ने हिजाब पहने हुए हैं और पर्दे वाली हैं और अपने सारे काम करती हैं। अपने कर्तव्य ख़ुश-उस्लूबी से अदा करती हैं। उनमें से एक अमरीका में रहती है और वहां लजना की जो लोकल तंज़ीम है उस की सदर भी हैं। हम अपनी महिलाओं को आर्गेनाईज़ करते हैं और ये तंज़ीम लजना इमाल्लाह कहलाती है और आज़ादाना अपने प्रोग्राम आयोजित करती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जहां तक महिलाओं का मर्दों के साथ नमाज़ पढ़ने का सम्बन्ध है। तो यू.के में रोलिंग पार्टी के एक सियास्तदान ने मुझ से प्रश्न किया था कि क्या भविष्य में ऐसा सम्भव है कि महिलाए और पुरुष इकट्ठे नमाज़ पढ़ सकें। तो उसे मैंने बताया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में ऐसा होता था कि पुरुष आगे सफ़ें बनाकर नमाज़ पढ़ते थे और महिलाएं मर्दों के पीछे सफ़ें बनाकर नमाज़ पढ़ती थीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नमाज़ की विभिन्न हालतें हैं और विभिन्न हिस्से हैं इकट्ठे नमाज़ पढ़ने की सूरत में महिलाओं के लिए कुछ हिस्सों की अदायगी मुश्किल है इस लिए महिलाओं ने अपनी सहूलत के लिए अलग अलग जगह पर नमाज़ पढ़ने को बेहतर समझा है। मजबूरी के तहत एक हाल में भी नमाज़ पढ़ी जा सकती है।

एक मेंबर पार्लियामेंट ने प्रश्न किया कि मस्जिद का नाम "मस्जिद मर्यम" रखने का क्या कारण है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं जुमआ वाले दिन मस्जिद के उद्घाटन समारोह में इस विषय पर वर्णन करूँगा। आप इस समारोह में शामिल होने के लिए आएं।

एक मेंबर पार्लियामेंट ने प्रश्न किया कि सुन्नी और शीया का जो फ़िर्क़ा है इस की क़ुरआन-ए-करीम में कोई बुनियाद है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-करीम में तो कोई बुनियाद नहीं है और न ही किसी फ़िर्क़ा की कोई तफ़रीक़ है। जब क़ुरआन-ए-क्रीम का नाज़िल हुआ तो उस समय कोई फ़िरक़ा नहीं था। ये सब फ़िरक़े बहुत बाद में बने हैं। जिस तरह यहूदियत और ईसाइयत में बाद में फ़िरक़े हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमारा यह ईमान है कि एक ख़ुदा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के नबी हैं। एक क़ुरआन है हम सब अम्बियाँ पर भी ईमान लाते हैं। क़ुरआन-ए-करीम में एक ही दीन "इस्लाम" का वर्णन है। इन फ़िर्क़ों का वर्णन नहीं है। इस लिए हम चाहते हैं कि सब इस दीन-ए-वाहिद पर इकट्ठे हों। और सब एक दूसरे की इज़्ज़त और सत्कार करने वाले दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने वाले हों। शेष आगे....

**इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस**

**ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।**

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

**तालिबे दुआ**

**मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर( उत्तर प्रदेश)**

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 28 April 2022 Issue No.17

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

# सदक़तुल फ़ित्र का देना

अल्-हमदो लिल्लाहि रमज़ानुल मुबारक का पवित्र महीना अप्रैल की पहली दहाई से शुरू हो रहा है। इस्लाम में फ़ित्राना की अदायगी के लिए एक साअ अर्थात क़रीबन 2 किलो 750 ग्राम अनाज की शरह निर्धारित है। जमआत के लोग पूरी शरह के साथ रमज़ानुल मुबारक की पहली या दूसरी दहाई के अंदर अंदर ही सदक़तुल फ़ित्र की अदायगी की कोशिश करें। चूँकि भारत के विभिन्न राज्यों में आहार (गंदुम, चावल) की क़ीमत अलग अलग हैं इस लिए अपनी स्थानीय क़ीमत के अनुसार निर्धारित शरह 2 किलो 750 ग्राम (आहार) के अनुसार फ़ितराना की रक़म की अदायगी करें। पंजाब के लिए इस वर्ष सदक़तुल फ़ित्र की रक़म तकरीबन छप्पन रुपये (rs.56/) निर्धारित की गई है।

स्थानीय जमाअत में गरीब और ज़रूतमंद मौजूद होने की सूरत में सदक़तुल फ़ित्र की मजमूई रक़म में से नव्वे फ़ीसद तक की रक़म मज्लिस-ए-आमला के मश्वरा और फ़ैसला के बाद तक़सीम की जा सकती है बक़ीया रक़म मर्कज़ में जमा करवानी होगी। जिस जमाअत में गरीब और ज़रूतमंद न हों उस जमाअत की वसूल शूदा समस्त रकमें सदर अंजुमन अहमदिया के जमाअती एकाऊंट में आनी चाहिए।

स्पष्ट रहे कि फ़ित्राना की रक़म मसाजिद इत्यादि की ज़रूरत पर ख़र्च करने की आज्ञा नहीं है।

(नाज़िर बैतुल माल क़ादियान)

★ ★ ★

# अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

और चूँकि आम तौर पर अक्सर लोग रख लेते हैं, इस लिए अगर कोई तआमुल समझ कर रख ले,तो कोई हर्ज नहीं, परन्तु عِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ का फिर भी लिहाज़ रखना चाहिए।"

"इस पर मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि "यूं भी तो इन्सान को महीने में कुछ रोज़े रखने चाहिऐं।"

हम इतना कहना चाहते हैं कि एक अवसर पर हज़रत इकदस ने भी फ़रमाया था कि सफ़र में तकालीफ़ उठा कर जो इन्सान रोज़ा रखता है तो मानो अपने ज़ोर-ए-बाज़ू से अल्लाह तआला को राज़ी करना चाहता है। उस को अनुमोदित और वर्जित इताअत करके ख़ुश नहीं करना चाहता। यह ग़लती है। अल्लाह तआला की इताअत अनुमोदित और वर्जित में सच्चा ईमान है।"

(मल् फ़ूज़ात , भाग प्रथम, पृष्ठ 266 मुद्रित 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

फिर لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ में रोज़ों का एक और फ़ायदा यह बताया गया है कि इस के नतीजा में तक़्वा पर सबात-ए-क़दम हासिल होता है और इन्सान को रूहानियत के उत्तम स्थान प्रथम होते हैं। इस लिए रोज़ों के नतीजा में केवल अमीर ही अल्लाह तआला का क़ुरब हासिल नहीं करते बल्कि गरीब भी अपने अंदर एक नया रुहानी इन्क़िलाब महसूस करते हैं और वे भी अल्लाह तआला के मिलाप से आनंदित होते हैं। ग़रीब बेचारे सारा साल तंगी से गुज़ारा करते हैं और कई दफ़ा उन्हें कई कई फ़ाक़े भी आ जाते हैं अल्लाह तआला ने रमज़ान के माध्यम से उन्हें तवज्जा दिलाई है कि वे इन फ़ाक़ों से भी सवाब हासिल कर सकते हैं और ख़ुदा तआला के लिए फ़ाक़ों का इतना बड़ा सवाब है कि हदीस में आता है अल्लाह तआला ने फ़रमाया اَلصَّوْمُ لِیْ وَاَنَا اُجْزٰی بِهٖ अर्थात सारी नेकियों के फ़वायद और सवाब अलग अलग हैं लेकिन रोज़ा की प्रतिफल ख़ुद मेरी ज़ात है। और ख़ुदा तआला के मिलने के बाद इन्सान को और क्या चाहिए। उद्देश्य रोज़ों के ज़रीया गरीबों को ये नुक्ता बताया गया है कि इन तंगियों पर भी यदि वे बेसबर और नाशुकरे न हों और हर्फ़-ए-शिकायत ज़बान पर नहीं लाएंगे जैसा कि कुछ नादान कह दिया करते हैं कि हमें ख़ुदा तआला ने क्या दिया है कि नमाज़ें पढ़ें और रोज़े रखें तो यही फ़ाक़े उन के लिए नेकियां बन जाएँगी और उनका बदला स्वयं ख़ुदा तआला हो जाएगा। अत: अल्लाह तआला ने रोज़ों को गरीबों के लिए तसकीन का माध्यम बनाया है ताकि वे निराश न हों और यह न कहें कि हमारी फिक्रो भुकमरी का जीवन किस काम का। अल्लाह तआला ने रोज़ा में उन्हें यह गुण बताया है कि अगर वे इस चिंता और भुकमरी के जीवन को ख़ुदा तआला की रज़ा के अनुसार गुज़ारें तो यही उन्हें ख़ुदा तआला से मिला सकती है।

(तफ़सीर-ए- कबीर, भाग 2, पृष्ठ 377 ऐडीशन 2010 ई. क़ादियान)

★ ★ ★

## हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

**खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।**

तालिबे दुआ
**Sohail Ahmad Nasir and Family**
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad